

मुकम्मल

# सूची नमाज़

साथ  
में

नीयत नामा

और

तासबून

आएं



नाज़ बुक डीपो

कालूटोला मस्जिद के  
कलकत्ता



मुकम्मल

916424  
63408

# सच्ची नमाज़

For M/S SULTANA INDUSTRIES

Prop., Sk. Abdul Gafar

At: Malpikhandra, P.O.-Nilail

Dist.-Cuttack, PIN-753001

साथ  
में

## नीयत नामा

- मस्नून हुआएँ
- मसाइले नमाज़
- नफ़ल नमाज़ें
- औरतों की नमाज़
- कुरबानी ● अक्कीका
- जनाज़े का बयान

## नाज़ बुक डिपो

कोलूटोला मस्जिद के अन्दर कलकत्ता - ७३



## पाँच वक़्त और दीगर नमाज़ों का जदवल

वक़्त	फ़र्ज़ से पहले सुन्नते ग़ैर मुअक्किदा	फ़र्ज़ से पहले सुन्नते मुअक्किदा	फ़र्ज़	फ़र्ज़ के बाद सुन्नते मुअक्किदा	नफ़ल	वाजिब	नफ़ल	रकअतों की कुल तादाद
फ़ज़्र		२	२					४
ज़ुहर		४	४	२	२			१२
अस्र	४		४					९
मगरिब			४					७
इशा	४		४	२	२	२	२	१७
जुम्आ		४	२	४/ग़ैर मुअक्किदा २	२	विन्न		४
दीगर नमाज़ें	इशराक ४/१२ अव्बाबीन ६	चाशत ४ तहज्जुद १२		सब नफ़ल	तरावीह २० ईदन २			
नोट	तरावीह और ईदन की नमाज़ें वाजिब हैं। इशराक-चाशत-अव्बाबीन और तहज्जुद की नमाज़ें नफ़ल लेकिन अहम और ज़रूरी।							

२

इस्लाम की बुनियाद पाँच बातों पर है—.....

- १ कलिमए तैयब ○ दिल से कुबूल करना और जुबान से इकरार करना।
- २ नमाज़ ○ रोजाना पाँच वक़्त नमाज़ों का अदा करना।
- ३ रोजा ○ रमज़ान शरीफ़ के रोजे रखना।
- ४ हज़ ○ साहबे हैमियन को सारी उम्र में एक बार हज़ करना।
- ५ जकात ○ साहबे निसाब को हर साल अपनी कमाई का चालीसवां हिस्सा मुस्तहेकीन में तकसीम करना।

### इस्लामी कलिमे

#### १. कलिमए तैयब

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

लाइला ह इल्लाल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ○

#### २. कलिमए शहादत

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

अशहदु अल्लाइला ह इल्लाल्लाहु वहवह ला शरी क लह व अशहदु अब मुहम्मदन अबदुह व रसूलुह ○

#### ३. कलिमए तमजीद

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ

मुवहानल्लाहि वल हमु लिल्लाहि व ला इ ला ह इल्लाल्लाहु वल्लाहु अकबर व ला हाँला व ला कुव व त इल्ला विल्लाहिल अलीदिल अजीम ○



#### ४. कलिमए तौहीद

شَهِدَ كُلُّ نَفْسٍ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ  
أَنَّ اللَّهَ الْمَلِكُ وَالْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا يَأْتِيهِ  
الْإِلْهَامُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ  
وَالْأَكْبَرُ الْأَعْلَى

लाइला ह इलल्लाहु वहदह ता शरी क लह लहुलमुल्कु व लहुल  
हम्दु युहद व युमीनु व हु व हयुल ता यम्नु अ व वन अ व दो  
नुल जलालि वल इकामि वि य विहिल खेर • व हु व अला  
कुल्लि शयइन कदीर ०

#### कलिमए इस्तिाफ़ार

بِغَيْرِ اسْتِغْفَارٍ: أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ رَبِّي مِنْ كُلِّ  
ذَنْبٍ أَدْنَى ذَنْبٍ عَمْدًا أَوْ خَطِيئَةً أَوْ عِلًّا بِيَدٍ  
وَأَوْ تَبِ إِلَيْهِ مِنْ الذَّنْبِ الَّذِي أَعْلَمُ أَنَّهُ  
مِنْ الذَّنْبِ الَّذِي لَا أَعْلَمُ أَنَّهُ مِنْ  
عِلْمِهِ الْغُيُوبِ وَسَيِّئًا الرَّغِيْبِ وَفَقْرًا لِلدُّرُوبِ  
وَالْخَوَلِّ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ

अमनाफ़िरल्ला ह रबी भिन कुल्लि ज़ाबिन अज़नबतुहु अ म  
दन अब ख त अन सिरन औ अलानि य तवै व अनूबु इलहि  
मिनज़ाबिल लजी आअलमु व मिनज़ाबिललजी ता आअलमु  
इय क अन त अल्लामुल गुप्ति व सनारल ओयूवि व ग़फ़ाररज़ुन्नि  
व ला हव ल वला कुव व त इल्ला विल्लाहिल अलीइल अज़ीम ०

#### ५. कलिमए रबूदे कुफ़र

شَهِدَ كُلُّ نَفْسٍ أَنَّ اللَّهَ رَبُّنَا أَعُوذُ بِكَ مِنْ  
أَنْ أَتُشْرِكَ بِكَ شَيْئًا وَأَنَا أَعْلَمُ بِكَ  
وَأَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا أَعْلَمُ بِهِ نَبِيٌّ عَمْدًا  
وَنَبِيٌّ أَتَى مِنْ الْكُفْرِ وَالشِّرْكِ وَالْكَذِبِ  
وَالْغَيْبِ وَالْبِدْعَةِ وَالْبَغْيِ وَالْإِسْلَامِ  
وَأَفْئُتُ إِلَّا بِاللَّهِ فَحَسْبُ زُكُورُ اللَّهِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ जु वि क भिन अन उशरि क वि क शयऔ  
व अना आअ ल मु विही व अस्तगाफ़िर क लिमा ता आअलमु  
विही तुबु अनहु व तवरानु भिनल कुफ़रि बशिशकि वल किजवि  
वल णि वति वल बिद अति वन्नमी म ति वल फ़्याहिशि वल  
बुहतानि वल मआसी कुल्लिहा व अस्तमनु व आमननु व अक़ुलु  
लाइला ह इलल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह ०

#### ईमाने मुजमल

أَشْهَدُ بِاللَّهِ كَاهُوَ بِأَسْمَائِهِ وَفَعَلَتْ بِخَلْقِهِ أَحْكَامًا وَكَافَرَهُ

आमनु विल्लाहि कमा हु व वि अममाएही व सिफ़ातिही व  
कविलनु जमी अ अहकामिही व अरकानिही ०

#### ईमाने मुफ़रसल

صَدَقْتُ إِيمَانًا مُفَضَّلًا أَمَنْتُ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ  
وَرُسُلِهِ وَأَيُّوْمِهِ الْآخِرِ وَالْقَدِيرِ خَيْرِهَا وَسَيِّئِهِ مِنَ اللَّهِ  
لَعَنَ عَلَى وَابِعَتِ بَعْدَ الْمَوْتِ



आमन्तु विल्लाहि व मला इ क तिही व कुतु बिही व रुमुलिही वल  
यांमिल आखिरि वल कदरि खरेही व शरही भिनल्लाहि तआला  
वल वाअसि वाअदल मौन ०

### नीयत का मतलब

नीयत के माने हैं दिल में किसी काम के करने का इरादा करना जैसे  
बुझ करने से पहले जहन में यह रखना कि मैं बुझ करता हूँ या करती  
हूँ। कुछ काम ऐसे हैं कि नीयत न भी हो तब भी अरकान पूरे कर  
लेने से वह काम हो जाता है जैसे गुस्ल करना, बुझ करना वगैर।  
लेकिन ज्यादातर काम ऐसे हैं कि वगैर नीयत के वह पूरे हो ही नहीं  
सकते जैसे नमाज़ पढ़ना। यह समझना और तै कर लेना जरूरी होता  
है कि किस वक़्त की, कौन सी और कितनी रकअत नमाज़ पढ़ना है।  
नमाज़ पढ़ने के लिए नीयत करना फ़र्ज़ है। यानी दिल में इरादा करे  
और सोच समझ ले कि कौन सी नमाज़ पढ़ी जा रही है। इसी इरादा  
और तै कर लेने को नीयत करना कहते हैं। मुंह से तलाफ़ुज़ या  
उच्चारण का अदा करना मुस्तहब है। अपनी जुबान या भाषा में नीयत  
करने से भूल होने की सम्भावना नहीं रहती है और वेहतर भी है।  
अरबी जुबान में नीयत करना हो तो अरबी में मतन और उसका  
हिन्दी उच्चारण या अर्थ लिखा जाता है।

दुआ मांगने की भी बहुत अहमियत है। दुआ का मतलब है अल्लाह  
को अपनी या किसी की जरूरतों के लिए पुकारना, उस से मदद  
मांगना, इत्तिजा करना। अल्लाह ही हमारी पुकार सुनता है, वह  
हाज़त रचा है और सिर्फ़ वही इस लाइक है कि उस को पुकारा जाए।  
अल्लाह के सिवा और किसी को अपनी जरूरत या मदद के लिए  
पुकारना या किसी को भी हाज़त रचा समझना शिर्क है। और शिर्क  
ऐसा गुनाह है जो वगैर तौबा-ए-नुबूहा के माफ़ नहीं होता।

### नमाज़ों की नीयत

(अरबी मतन, माथ में हिन्दी तर्जुमा)

नमाज़े फ़ज्र की दो रकअत सुन्नत

نَا لِي رَكَعَتَيْنِ صَلَوَاتِي الْفَجْرِ سُنَّةٌ رَّسُولِ اللَّهِ ﷺ  
إِلَى جَهَنَّمَ الْكُفْرَةِ الشَّرِّ يُقِيَّةٌ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैं ने दो रकअत नमाज़ फ़ज्र की सुन्नत, वामने अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर □

फ़ज्र की दो रकअत फ़र्ज़

رَكَعَتَيْنِ صَلَوَاتِي الْفَجْرِ فَرَضٌ رَّسُولِ اللَّهِ ﷺ  
إِلَى جَهَنَّمَ الشَّرِّ يُقِيَّةٌ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ फ़ज्र की फ़र्ज़ वामने अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर □

जुहर की चार रकअत सुन्नत

رَكَعَاتٍ صَلَوَاتِي الظُّهْرِ سُنَّةٌ رَّسُولِ اللَّهِ ﷺ جَهَنَّمَ الشَّرِّ يُقِيَّةٌ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ जुहर की सुन्नत, वामने अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर □

जुहर की चार रकअत फ़र्ज़

رَكَعَاتٍ صَلَوَاتِي الظُّهْرِ فَرَضٌ رَّسُولِ اللَّهِ ﷺ جَهَنَّمَ الشَّرِّ يُقِيَّةٌ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज़ जुहर की फ़र्ज़ वामने अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर □



**चार जुहर दो रकअत सुन्नत की नीयत**

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِ الْاِثْنَيْنِ رَسُلًا  
رَسُولِ اللَّهِ تَعَالَى مُتَوَجِّهًا إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ  
اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज जुहर की सुन्नत, वास्ते अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर □

**दो रकअत नमाज नगल**

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِ الْاِثْنَيْنِ مُتَوَجِّهًا  
إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज नगल वास्ते अल्लाह तआला के मुँह  
मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर □

**अस की चार रकअत सुन्नत**

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رَكْعَاتٍ صَلَوَاتِ الْاِثْنَيْنِ مُسَلِّمًا  
رَسُولِ اللَّهِ تَعَالَى مُتَوَجِّهًا إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज अस की सुन्नत, वास्ते अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर □

**अस की चार रकअत फर्ज**

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رَكْعَاتٍ صَلَوَاتِ الْاِثْنَيْنِ وَفَرْضًا  
لِلَّهِ تَعَالَى مُتَوَجِّهًا إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज अस की फर्ज वास्ते अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर □

**मगारिब की तीन रकअत फर्ज**

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى ثَلَاثَ رَكْعَاتٍ صَلَوَاتِ  
الرَّسُولِ وَفَرْضًا لِلَّهِ تَعَالَى مُتَوَجِّهًا إِلَى جَهَنَّمَ  
الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने तीन रकअत नमाज मगारिब की फर्ज वास्ते अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर □

**मगारिब की दो रकअत सुन्नत**

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رَكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِ الرَّسُولِ  
مُسَلِّمًا رَسُولِ اللَّهِ تَعَالَى مُتَوَجِّهًا إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज मगारिब की सुन्नत, वास्ते अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर □

**इशा की चार रकअत सुन्नत**

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رَكْعَاتٍ صَلَوَاتِ  
الرَّسُولِ مُسَلِّمًا رَسُولِ اللَّهِ تَعَالَى مُتَوَجِّهًا إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज इशा की सुन्नत, वास्ते अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर □

**इशा की चार रकअत फर्ज**

نَوَيْتُ أَنْ أَصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رَكْعَاتٍ صَلَوَاتِ الرَّسُولِ  
وَفَرْضًا لِلَّهِ تَعَالَى مُتَوَجِّهًا إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज इशा की फर्ज वास्ते अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर □



### इशा के फर्ज के बाद की दो रकअत सुन्नत

تَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِهِ  
أَوْسَعُ سِتْرَةٍ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَتَوَجَّهْتُ إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज इशा की सुन्नत, वास्ने अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाह अकबर □

### बिना नमाज तीन रकअत याजिब की नीयत

تَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى ثَلَاثَ رُكْعَاتٍ صَلَوَاتِهِ أَوْسَعُ سِتْرَةٍ وَأَجِبْتُ لِلَّهِ  
تَعَالَى تَوَجُّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने तीन रकअत नमाज बिना की याजिब वास्ने अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाह अकबर □

### तहीयतुल मस्जिद यानी मस्जिद में दाखिल होने की दो रकअत सुन्नत

تَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِهِ أَوْسَعُ سِتْرَةٍ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَتَوَجَّهْتُ إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज मस्जिद में दाखिल होने की सुन्नत,  
वास्ने अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाह  
अकबर □

### जुम्आ से पहले की चार रकअत सुन्नत

تَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رُكْعَاتٍ صَلَوَاتِهِ أَوْسَعُ سِتْرَةٍ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَتَوَجَّهْتُ إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज जुम्आ के कज्ज की सुन्नत, वास्ने  
अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाह  
अकबर □

### जुम्आ की दो रकअत फर्ज

تَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِهِ أَوْسَعُ سِتْرَةٍ  
لِلَّهِ تَعَالَى تَوَجُّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज जुम्आ की फर्ज वास्ने अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाह अकबर □

### बाद जुम्आ चार रकअत सुन्नत

تَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى أَرْبَعَ رُكْعَاتٍ صَلَوَاتِهِ أَوْسَعُ سِتْرَةٍ  
رَسُولُ اللَّهِ ﷺ وَتَوَجَّهْتُ إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज जुम्आ के बाद की सुन्नत, वास्ने  
अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाह  
अकबर □

### नमाजे ईदुल फ़ित्र

تَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِهِ أَوْسَعُ سِتْرَةٍ  
لَا عَدَّةَ وَلَا جِبَا لِلَّهِ تَعَالَى تَوَجُّهًا إِلَى جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज ईदुल फ़ित्र की याजिब छः ज़ाइद  
तकबीरों के साथ वास्ने अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ  
की तरफ अल्लाह अकबर □

### नमाजे ईदुल अजहा

تَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِهِ أَوْسَعُ  
مَعَ سِتْرَةٍ تَكْبِيرَاتٍ لَا عَدَّةَ وَلَا جِبَا لِلَّهِ تَعَالَى تَوَجُّهًا إِلَى  
جِهَةِ الْكَعْبَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज ईदुल अजहा की याजिब छः ज़ाइद



नकवीरो के साथ वास्ते अल्लाह तआला के मुंह मेरा काअवा शरीफ  
की तरफ अल्लाह अकबर □

### दो रकअत नमाज़े तरावीह

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَتِ صَاحِبُ السُّعُرَةِ  
يَوْمَ تَوَلَّى الْوَلْدُ الْأُمَمَ وَالْمَسْكِينُ الْكَبِيرَ الْحَقَّ الْقَائِمُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ तरावीह की सुन्नत, वास्ते अल्लाह  
तआला के मुंह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाह अकबर □

### याद रखें

१. नफ़ल नमाज़ चाहें वह जुहूर की हो मगरिब की या इशा की,  
सब की नीयत एक ही जैसी होती है। यानी सिर्फ नफ़ल नमाज़ की

नीयत ○

२. जमाअत के साथ नमाज़ों की नीयत में "इक त दैनु बिहाजल  
इमाम" भी कहे ○

३. जमाअत के साथ पढ़ी जाने वाली नमाज़ें हैं— तमाम फ़र्जे  
नमाज़ें— ईदन की नमाज़— रमजान में नमाज़े तरावीह और नमाज़े  
वित्र वगैरा— और भी हैं ○

४. नीयत करने में इतनी देर न करे कि कोई रकअत या जमाअत  
ही धूट जाए— विल में दरावा रखना ही काफ़ी है कि कौन-सी नमाज़  
पढ़ी जा रही है ○

### आयतुल कुर्सी

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ  
سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ  
مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ  
مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ  
وَالْأَمْنُ وَالْأَمْنُ وَالْأَمْنُ وَالْأَمْنُ

अल्लाह ला इला ह इल्ला हुवल हक्यूम ला न ख़ुज़ूह मि न  
तुँव वला नोम ○ लहू मा फ़िस्समावाति वमाफ़िल अर्द ○ मनज़ल्लनी  
यश फ़ओ अिन्यह इल्ला बि इजनिही यअ लमु मा वै न एदी हिम वमा  
ख़लफ़हुम वला युहीनू न विशै इम् मिन् अिलमही इल्ला विमा शा अ  
वसि अ क़ुर्मियुहुरस्समावाति वल अर्द ○ वला यऊ दुह हिफ़ज़ोहुमा व हु  
वल अलीयुल अज़ीम ○

फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ने की बड़ी फ़ज़ीलत है, हदीस  
शरीफ़ में है कि जिसने हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद आयतुल कुर्सी पढ़ी,  
उस के जन्नत में दाख़िल होने में मौत ही आइ है और जो शरूब सोने  
वक़्त उसको पढ़ेगा, अल्लाह तआला उसके घर और उसके पड़ोसी के  
घर और आस-पास के कुछ घरों को (रात भर) अमन व अमान में  
रखेगा।

फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद ३३ बार सुब्हानल्लाह और ३३ बार अलहम्दु  
लिल्लाह और ३४ बार अल्लाह अक़बर पढ़ने की भी बड़ी फ़ज़ीलत  
आयी है।

### दुज़ा का बयान

#### दुज़ा में चार फ़र्ज़ हैं

१. पेशानी के बालों से ठोढ़ी के नीचे तक और दोनों कानों की लों  
तक मुंह धोना ●
२. दोनों हाथ कुहनियाँ समेत धोना ●
३. चौथाई सर का मसह करना ●



४. दोनों पांव टखनों समेत धोना।

### घुनू की सुन्नतें

१. नीयत करना
२. शुरू में विस्मिल्लाह पढ़ना
३. पहले दोनों कलाई तक धोना
४. कुल्ली करना
५. भिस्वाक करने नाक में पानी डालना, यानी सांस के साथ ऊपर को पानी लेना,
६. नाक में पानी डालना, यानी सांस के साथ ऊपर को पानी लेना, जहां तक नर्म जगह है
७. हर अजब तीन-तीन बार धोना
८. सारे सर और कानों का मसह करना
९. दाढ़ी और उंगलियों का खिलाल करना
१०. लगातार इस तरह धोना कि पहले मुँह धोए, फिर कुहनियों समेत हाथ धोए, फिर सर का मसह करे, फिर पांव धोए।

**फायदा** सुन्नत छोड़ने से घुनू तो हो जाता है, मगर सवाब कम मिलता है।

**फायदा** घुनू में कोई जाजिब नहीं है।

### घुनू की मुस्तहब चीजें

१. किल्ला रख होकर बैठना,
२. मल-मल कर धोना,
३. दाहिनी तरफ से शूल करना,
४. बचा हुआ पानी खड़े होकर पीना,
५. गरदन का मसह करना,
६. दूसरे से मदद न लेना।

### घुनू की मकरह चीजें

१. ना-पाक जगह घुनू करना
२. सीधे हाथ से नाक साफ करना,
३. घुनू करते वक़्त दुनिया की बातें करना
४. सुन्नत के खिलाफ़ घुनू करना
५. पानी ज्यादा बहाना
६. जोर से छपक्के मारना।

**मसधला** घुनू में गरदन का मसह मुस्तहब है और गले का मसह विद्वत है।

### घुनू तोड़ने वाली बातें

१. पाखाना-पेशाब, मज्जी, हवा का निकलना
२. झूना या फीप निकल कर बह जाना
३. मुँह भर के कं हो जाना
४. टोक लगा कर सो जाना
५. मस्त या बेहोश हो जाना
६. रुकू अथवा मज्जा वाली नमाज़ में खिलखिला कर हंसेना।

### घुनू करने का मस्तून तरीक़ा

जब घुनू करने का इरादा हो तो दिल में नीयत करे कि मैं घुनू करता हूँ, फिर विस्मिल्लाह पढ़कर तीन बार दोनों हाथों को पहुँचाएँ तक धोए। फिर तीन बार कुल्ली और भिस्वाक करे। इसके बाद तीन बार नाक में पानी डाले और बाएँ हाथ से नाक साफ़ करे। फिर तीन बार मुँह धोए, पेशानी से लेकर ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक। अगर दाढ़ी घनी हो, तो जो बाल चेहरे की हद में हैं, उन का धोना फ़र्ज है और जो बाल चेहरे की हद से बड़े हों, उन का धोना जरूरी नहीं, हाँ, ऐसी दाढ़ी का खिलाल करना सुन्नत है और जो हल्की दाढ़ी हो, जिसमें नज़र आता हो उसके नीचे ठोड़ी तक धोना फ़र्ज है। इसके बाद दोनों हाथ कुहनियों समेत तीन बार धोए, पहले दाहिना हाथ फिर बायाँ हाथ, फिर सर का और उंगलियों के पिछले हिस्से से गरदन का मसह करना। मसह का तरीक़ा यह है कि पानी से दोनों हाथों को तर कर के सब उंगलियाँ बराबर भिलाकर पेशानी के बालों पर रख कर गुद्दी तक ले जाएँ, फिर गुद्दी से लेकर दोनों हाथों की हथेलियों को इस तरह सामने की तरफ़ वापस लाएँ कि कानों से लेकर सर के बीच तक जो हिस्सा दाएँ-बाएँ बाकी रह गया हो, उसका मसह होता चला जाएँ, उसके साथ ही कानों का मसह इस तरह करे कि कानों के दोनों सوراखों में शहादत की उंगलियाँ डाल कर अंगूठों से कानों के पिछले हिस्से पर मसह करे। मसह सिर्फ़ एक ही



बार करना चाहिए, इसके बाद बायां पांव टखनों तक नीचे बार करे और फिर इसी तरह बायां पांव तीन बार धोए।

## बुज्र की दुआएं

★ जब बुज्र शुरू करना हो तो नीयत करे और पढ़े :

بِسْمِ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَىٰ دِينِ الْإِسْلَامِ  
الَّذِي هَدَانَا لَهُ وَالْكَفَرُ ظُلُمَةٌ

विष्मिल्लाहिल अजीमि बतहम्दु लिल्लाहि अला वीनिल इस्लामि  
अलहम्लामु हक्कु वल कुफरु बातिनुन अलहम्लामु नूकै वलकुफरु

जुलमह •

★ मिसवाक करने की दुआ

اللَّهُمَّ اجْعَلْ نِيَّتِي هَذَا  
مِنْكُمْ لَدَىٰ نَوْبِي وَمَوْضِعِي لَكَ يَا سَيِّدِي وَبِخُصِّيَّةٍ  
وَجَهْدِي كَمَا يَفْتَخِرُ بِهِ اسْلَامَانِي

अल्लाहुम्मजअल निस्वीकी हाजा मुहीसल लिजुनूवी व मरजातल  
क या सयदी व बयिज बिही वन्ही कमा वयज त बिही असनानी

★ कुल्ली करते वक़्त पढ़े

اللَّهُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ تِلَاوَةِ الْقُرْآنِ وَذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحَسْبِي عِبَادَتُكَ

अल्लाहुम्म अजिबी अला तिलावतिल कुरआनि व जिकरि क  
शुक्रि क व हुस्नि डिबा व तिक •

★ नाक में पानी डालते वक़्त पढ़े

اللَّهُمَّ اجْعَلْ رَأْيِي رَأْيَ الْحَبِيبَةِ وَلَا تُرْخِني رَأْيَ الشَّاسِ

अल्लाहुम्म अहिनी राए हतल जवति व ला तुरिहनी राए हतबारा

★ मुंह धोते वक़्त पढ़े

اللَّهُمَّ بَيِّنْ لِي يَوْمَ خَلْقِي يَوْمَ بَيِّنْ لِي وَجْهِي وَخَلْقِي وَجْهِي

अल्लाहुम्म बयिज़ वन्ही यौ म तबयज़ु बु नू हुब व तमबद्द  
बुज्रह •

★ दाहिना हाथ धोते वक़्त पढ़े

اللَّهُمَّ اعْطِنِي كِتَابِي بِنِيَّتِي وَحَاسِبِي حِسَابًا سَيِّئًا

अल्लाहुम्म अअ तिनी किताबी वि यमीनी व हासिबनी हिमाबय  
यमीरा •

★ बायां हाथ धोते वक़्त पढ़े

اللَّهُمَّ لَا تَعْطِنِي كِتَابِي بِنِيَّتِي وَلَا مَوْضِعِي وَلَا مَوْضِعِي

अल्लाहुम्म ला तुअ तिनी किताबी बिशिमाली वला मिर्व वरा इ  
जहरी •

★ सर का मसह करते वक़्त पढ़े

اللَّهُمَّ اطْلُبْ رَحْمَتَ ظِلِّ عَرْشِكَ طَلِبْ عَرْشِكَ طَلِبْ عَرْشِكَ

अल्लाहुम्म अ जिल्लनी तह त जिल्लि अर्शि क यौ म ला जिल्ल इल्ला  
जिल्ल अर्शिक •

★ कानों का मसह करते वक़्त पढ़े

اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي مِنَ الَّذِينَ يُسْمَعُونَ الْقَوْلَ فَيُطِيعُونَ أَحْسَنَهُ

अल्लाहुम्मज अलनी मिनल्लजनी न यसतमिक नल कौ ल- फ़ यताबिक  
न अह सनह— •

★ ग़रदन का मसह करते वक़्त पढ़े

اللَّهُمَّ اغْنِنِي رِزْقِي مِنَ الشَّاسِ



अल्लाहुम्म अअ तिक रक्बती मिनन्नार •

★ सीधा पाँव धोने वस्त्र पड़े

وَلَا تُحِبُّكَ إِلَّا عَلَى الصِّرَاطِ يَوْمَ تَشْرُطُ الْأَقْدَامَ ۚ

अल्लाहुम्म सज्जित क द मी अलसिराति यौ म तजिल्लुल अकदाप •

★ उल्टा पाँव धोने वस्त्र पड़े

وَلَا تُحِبُّكَ إِلَّا عَلَى الصِّرَاطِ يَوْمَ تَشْرُطُ الْأَقْدَامَ ۚ

अल्लाहुम्मजअल जन्वी मशफरवै व स धि मशफरवै व तिजा र नी

लन तब्र •

वुजू से फ़ारिग होने के बाद खड़े होकर और आसमान की तरफ मुँह उठाकर कलिमए शहादत पढ़े, फिर कहे :

أَللّهُمَّ اجْعَلْهُ مِنِّي مِّنَ التَّائِبِينَ وَاجْعَلْهُ مِنِّي مِّنَ الْمُسْتَغْفِرِينَ ۚ

अल्लाहुम्मज अलनी मिनतोबावी न वजअलनी मिनल मु त तह

हरीन •

★ और यह भी पढ़े

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَ

يُحْيِيكَ أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ اسْتَغْفِرُكَ وَأُوبِيكَ إِلَيْكَ ۚ

सुब्हा न क अल्लाहुम्म व विहमदि क अशहदु अल्लाइला ह इल्ला अन त अस्तगाफिरु क व अनवु इलैक •

★ नमाज़ तहीयतुल वुजू की नीयत

لَوْ شَاءَ اللَّهُ لَصَلَّى كُلُّ مَوْلٍ بِوَالِدِهِ الْفَارِغِ ۚ

جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ ۚ

नवैनु अन उमल्लि य लिल्लाहि तअल्ला र क अनी मलानि तहयनुल वजू उ - मु त वज्जेहन इला जे हतिल कअ वनिश शरीफ़ति अल्लाहु अकबर •

### तयम्मूम का वयान

जिमको वुजू या गुस्ल करने की जरूरत हो और पानी न मिले या पानी तो हो, लेकिन उसके इस्तेमाल में बीमारी बढ़ने या बीमारी हो जाने का बड़ा डर हो या रस्सी-डोल यानी कुएँ में पानी निकालने का सामान मौजूद न हो या दुश्मन का डर हो या सफ़र में पानी एक मील के फ़ासले पर हो, तो इन सब शक्तों में वुजू और गुस्ल की जगह तयम्मूम करे ।

### तयम्मूम का तरीका

तयम्मूम में नीयत फ़र्ज है यानी नीयत करे कि मैं ना-पाकी दूर करने के लिए या नमाज़ पढ़ने के लिए तयम्मूम करता हूँ, नीयत के बाद दोनों हाथों को पाक मिट्टी पर मारे, फिर हाथ झाड़ कर तमाम मुँह पर मले और जितना हिस्सा मुँह का वुजू में धोया जाता है उतने हिस्से पर हाथ पड़वाए, फिर दोबारा मिट्टी पर हाथ मार कर हाथ को कुहनियों तक मले और उंगलियों का छिलाल भी करे ।

वुजू और गुस्ल के तयम्मूम में कोई फ़र्क नहीं, जितनी पाकी वुजू और गुस्ल से होती है, उतनी ही तयम्मूम से भी होती है । अगर बीस साल तक भी पानी न मिले तो तयम्मूम ही करता रहे ।

### तंबीह

पत्थर पर तयम्मूम जायज़ है, चाहे उस पर मिट्टी या धूल न हो, लेकिन कपड़े पर जायज़ नहीं । कुछ आदमी रेल में सफ़र करते हुए पानी न मिलने पर अपनी चादर पर तयम्मूम कर लेते हैं, यह जायज़ नहीं ।

### तयम्मूम तोड़ने वाली चीज़ें

जो चीज़ें वुजू को तोड़ देती हैं, उनसे तयम्मूम भी टूट जाता है, पानी



का मिलना और उसके इस्तेमाल पर कुदरत होना भी तयमूम का तोड़ देता है।

**मसूअला** अगर किसी का बुज्र भी नहीं है, न करना और इस्तिजा करना ३. फिर बुज्र करना ४. सारे वदन पर एक ही तयमूम काफ़ी है। बुज्र और गुस्ल की नीयत करके अलग अलग दो बार तयमूम करना ज़रूरी नहीं।

**तयमूम की नीयत**

पहले बिसमिल्लाह पढ़े फिर कहे :

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ تَعَالَى

नवेतु अत अ त यम्म म तकर्त वन इलल्लाहि तअल्ला •

**गुस्ल का वयान**

**इन चीज़ों से गुस्ल फ़र्ज हो जाता है—**

१. जागते में शहवत से मनी निकलना,
  २. सोहवत करना (अगरचे मनी न निकले),
  ३. हैज ख़ल्म होना,
  ४. निफ़ास बन्द होना।
- फ़ायदा** हैज उस ख़ून को कहते हैं, जो औरतों को हर माह आ पड़ता है उसी जगह को धो ले। अगर कुल्ली करना या नाक में पानी डालना है और निफ़ास वह ख़ून है, जो वज्या पैदा होने के बाद आता है
- गुस्ल में तीन फ़र्ज हैं—**
१. ख़ूब हलक तक पानी से मुंह भर कर कुल्ली करना,
  २. नाक में पानी बहाना, जहां तक नर्म जगह है,
  ३. तमाम वदन पर एक बार पानी बहाना।

**गुस्ल की सुन्नतें**

१. पाक होने की नीयत करना
२. पहले जाहिरी ना-पाकी को दूर करना और इस्तिजा करना
३. फिर बुज्र करना
४. सारे वदन पर तीन बार पानी बहाना
५. वदन को अच्छी तरह मलना।

**गुस्ल का मसन्नूत तरीक़ा**

जब गुस्ल करने का इरादा हो तो पहले दोनों हाथ गट्टों तक धोए फिर इस्तिजा करे और अगर जाहिरी ना-पाकी किसी जगह लगी है तो उसे धो डाले फिर बुज्र करे, जैसे नमाज़ के लिए बुज्र करते हैं। ख़ूब मुंह भर कर कुल्ली करे, रोज़ा न हो तो ग़रारा भी करे और नाक में ख़ूब ख़याल करके पानी बड़ावे। अगर पत्थर या पक्की ज़मीन पर गुस्ल करे तो दोनों पांव भी उसी बुज्र में धो ले, बुज्र के बाद धोड़ा-सा पानी लेकर सारे वदन को मले, फिर बाएं कंधे पर तीन-तीन बार और इसके बाद दाहिने कंधे पर, फिर बाएं कंधे पर तीन-तीन बार पानी डाले और हर जगह पानी पड़चाए, बाल बराबर भी कोई जगह सूखी रह जाएगी तो गुस्ल न होगा, फिर उस जगह से हट जाए और पांव धो ले। अगर बुज्र के वक्त पांव धो लिए थे, तो अब पांव धोने की ज़रूरत नहीं।

**मसूअला**

अगर गुस्ल के बाद याद आए कि फ़लां जगह पानी न धा, तो फिर से पूरा गुस्ल करना ज़रूरी नहीं, बल्कि ख़ास भूल गया तो ख़ास कमी को पूरा करने से गुस्ल पुरा हो जाएगा।

**मसूअला**

गुस्ल करने वक्त जो बुज्र किया है, उससे नमाज़ पढ़ सकते हैं। यानी दुबारा अलग से बुज्र करने की ज़रूरत नहीं।

**जुमआ का गुस्ल**

जुमा के दिन नमाज़ से पहले गुस्ल करना मुन्नत है। हदीस शरीफ़ में इसकी बड़ी तर्गीब व ताकीद आयी है।



## अज्ञान

फ़र्ज नमाजों से कवल अज्ञान पुकारना शिआरे इस्लाम में दार्जिकि और मुन्नने मुअकिदा है। जो शएस्म अज्ञान दे उमे चाहिए कि केमे जगह पर खड़े होकर किज्वा की तरफ मुंह करके शहादन के तुंगलियों को दोनों कानों में डालकर बलन्द आवाज से अज्ञान के पुरे कलिमान कहे।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝  
اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝  
اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝  
اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝  
اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

अशहदु अल्ला इला ह इल्ललल्लाह

अशहदु अल्ला इला ह इल्ललल्लाह

अशहदु अब मुहम्मदर रसूलुल्लाह

अशहदु अब मुहम्मदर रसूलुल्लाह

हय्ये अलससला हय्ये अलससला

हय्ये अलल फलाह हय्ये अलल फलाह

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर

ला इला ह इल्ललल्लाह।

फत्र की अज्ञान में दोनों हय्ये अलल फलाह के बाद दो बार कहे  
اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝

अस्मलानु खैरुमिन्न नौम

अस्मलानु खैरुमिन्न नौम

इक्रामन यानो जब नमाज के लिये खड़े हो तो दोनों हय्ये अलल

फलाह के बाद दो बार कहे

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝

कद कामतिसल्लाह कद कामतिसल्लाह

आर इक्रामन सुन्ने वाले कहे

اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝

अका महल्लाहु व अदामहा अका महल्लाहु व अदामहा

### अज्ञान का जवाब

जब अज्ञान सुने तो अज्ञान के जवाब देने का हुक्म है और अज्ञान के जवाब देने का तरीका यह है कि अज्ञान कहने वाला जो कलिमा कहे, सुन्ने वाला भी वही कलिमा कहे मगर हय्ये अलससला और हय्ये अलल फलाह के जवाब में

ला हौ ल व ला कुव व त इल्ला बिल्लाह कहे और फत्र की

अज्ञान में اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝

के जवाब में कहे اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ اَللّٰهُ اَكْبَرُ ۝ सदक त व वरर त

### अज्ञान के बाद की हुआ

وَالصَّلَاةُ وَالزَّكَاةُ وَالْحَقُّ وَالْوَظْفُ وَالْإِيمَانُ وَالْجَاهِدُ وَالْمَعْرُوفُ وَالنَّكَاهُ وَالْإِيمَانُ وَالْجَاهِدُ وَالْمَعْرُوفُ وَالنَّكَاهُ



وَالْفَضِيلَةَ وَاللَّحْظَ الرَّفِيعَ وَالْإِعْزَازَ  
مَقَامًا فَخْرِيًّا وَكَذَلِكَ وَأَزْوَاجُ  
سَفَائِدَ تَوَكَّرَ الْفَيْدَةُ الْإِشْطَرِيطُ الْإِبْرِيْدُ

अल्लाहुम्म रख्य हाजिहिद् दअ व तिताम्माति वस्सलातिल क्पा म नि  
आति मुहम्म द निल वसी ल त वल फ़जी ल त वद्द र जनर रफ़ी  
अ त ववअरहु मकामम्महूम् द निल्लजी व अत्तह वर- जुक्रना शफ़ा अ  
त हू यौमल क्रियामति इन्न क ला तुखलिफ़ुल मीआद ०

मस्जिद में दाखिल होने की दुआ

पहले दाहिना पैर रखे और पढ़े :

اَللّٰهُمَّ فَتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

□ अल्लाहुम्मफ़तहली अववा व रह्मतिक □

मस्जिद में दाखिल होकर एतिकाफ़ की नीयत करले जब तक मस्जिद  
में रहेगा सवाब पाता रहेगा ।

**एतिकाफ़ की नीयत**

لَسْجِدَ لِلّٰهِ دَخَلْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَرَبِّكَ سُبْحَانَ

विसमिल्लाहि दखलतु व अलैहि तवक्कलतु व नवैतु मुन्नतुल एतिकाफ़ ०

मस्जिद से निकलने की दुआ

पहले बायाँ पैर बाहर निकाले और पढ़े :

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ

□ अल्लाहुम्-म इन्नी अस् अलु क मिन फ़ज़्लिक □

दो रकअत मुन्नत दुखलुल मस्जिद की नीयत

تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ لَعَلَّى رُحْمَى صَلَوَاتِ دُخُولِ الْمَسْجِدِ  
سُبْحَانَ رَبِّكَ اَللّٰهُ لَعَلَّى مَوْجِبًا اِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

नवैतु अन उसल्लि य लिल्लाहि तआला रक्अति सला त दुखलुल  
मस्जिदि मुन्नति रसूलिल्लाहि तआला मु त बाजिहिन एला जिह्निल  
कअ वतिश शरीफ़ति अल्लाहु अकबर ०

**तबीह** मस्जिद में दुनिया की बातें करना, बदबूदार चीज़ें (जैसे  
प्याज लहसुन वगैरा) खा पी कर या सिग्रेट बीड़ी के इस्तेमाल के बाद

(बदबू खत्म होने से पहले) मस्जिद में आना सज़ा मना है ।

**मुत्फारिक मसअले**

**मसअला** वे-चुन्न कुरआन शरीफ़ पढ़ना दुरुस्त है, मगर झूना दुरुस्त  
नहीं और जिस पर गुस्ल फ़र्ज हो उसके लिए न कुरआन शरीफ़ पढ़ने  
की इजाजत है, न छूने की । हां, अगर जुज्बान के साथ छूए तो छू  
सकता है और उसका मस्जिद में दाखिल होना भी दुरुस्त है ।

**मसअला** हैज व निक़ास वाली औरत और जिस पर गुस्ल फ़र्ज हो,  
कुरआन शरीफ़ के अलावा दुआ व ज़िक्र और तस्बीह पढ़ सकती है ।

**मसअला** हैज व निक़ास वाली औरत न रोज़ा रख सकती है, न ही  
नमाज़ पढ़ सकती है । पाक होने के बाद भी उसको उस ज़माने की  
नमाज़ों का दोहराना ज़रूरी नहीं है । हां, अगर इस ज़माने में रमज़ान  
शरीफ़ के रोज़े आ गये हों तो पाक होने के बाद उनकी क़ज़ा रखना  
ज़रूरी है ।

**मसअला** जिस पर गुस्ल फ़र्ज हो, खा-पी सकता है और चल-फ़िर  
सकता है और सो भी सकता है, हां, जिनती जल्द गुस्ल कर ले  
बेहतर है ।



**भूमिशला** जिस पर गुल फर्ज हो, खाने और सोने के लिए ओं  
बुन कर ले तो मुस्तहब है।

### नमाज के वक्तों और रक'अतों का वयान

१. फज्र का वक़्त सुबह सादिक से शुरू होकर सूरज निकलने के  
बाकी रहता है- फज्र की नमाज कुल ४ रक'अत है- २ सुन्नत और  
२ फर्ज।

२. जुहर का वक़्त सूरज ढल जाने के बाद में शुरू होता है। जे  
तक हर चीज का साया उसमें दोगुना न हो उसका वक़्त बाकी रहने  
है। दो गुने साए से मुराद असली साए के अलावा है। असली साए  
वह है जो ठीक जवाल के वक़्त होता है। यह नमाज १२ रक'अत है  
- ४ सुन्नत - ४ फर्ज - २ सुन्नत - २ नफ़ल।

३. जुहर का वक़्त ख़त्म होने के बाद अस्स का वक़्त शुरू हो जाता  
है और सूरज छिपने तक बाकी रहता है, लेकिन जब सूरज पीला हो  
जाए, तो अस्स का वक़्त मकरूह हो जाता है। अस्स में ४ सुन्नत और  
४ फर्ज - कुल ८ रक'अत है।

४. जब सूरज छिप जाए तो मरिब का वक़्त शुरू हो जाता है जो  
सफ़ेद लाली गायब होने तक रहता है। हिन्दुस्तान व पाकिस्तान के  
इलाकों में कम से कम सवा घंटे और ज़्यादा से ज़्यादा डेढ़ घंटे तक  
मरिब का वक़्त रहता है। मरिब में पहले ३ फर्ज फिर - २ सुन्नत  
और २ नफ़ल कुल ७ रक'अतें हैं।

५. मरिब का वक़्त ख़त्म होते ही इशा का वक़्त शुरू हो जाता है  
जो सुबह सादिक होने तक रहता है, लेकिन आधी रात के बाद इशा  
का वक़्त मकरूह हो जाता है। इशा की नमाज १७ रक'अत है- ४  
सुन्नत - ४ फर्ज - २ सुन्नत - २ नफ़ल - ३ विब और २ नफ़ल।

**भूमिशला** जो वक़्त इशा का है, वही वक़्त विब की नमाज का भी

है, मगर विब की नमाज इशा के फर्जों से पहले नहीं पढ़ी जा सकती।

### नमाज के फर्ज, वाजिब, सुन्नत, मुप्सिदात और मकरूहात

#### शराइते नमाज और फ़राइजे नमाज

नमाज के चौदह फर्ज हैं जिनमें से कुछ ऐसे हैं जिनका नमाज में पहले  
होना ज़रूरी है, इनको नमाज के बाहरी फर्ज कहते हैं और इन्हें  
नमाज की शर्त भी कहा जाता है और कुछ फर्ज ऐसे हैं जो नमाज में  
दाखिल हैं। सब की फ़ेहरिस्त यह है—

१. वदन का पाक होना २. कपड़ों का पाक होना ३. मनोर  
औरत यानी मर्दा को नाफ़ से घुटने तक और औरतों के चेहरे,  
हथेलियों और कदमों के अलावा तमाम वदन का ढकना फर्ज है
  ४. नमाज की जगह का पाक होना ५. नमाज का वक़्त होना
  ६. क़िये की तरफ़ रुख़ करना ७. नमाज की नीयत करना
  ८. तक्बीरे तहरीमा ९. क़ियाम यानी खड़ा होना १०. क़िर'अत  
यानी एक वही आयत या तीन छोटी आयतें या एक छोटी सूरः पढ़ना
  ११. रुकू'अ करना १२. सज्दा करना १३. आख़री क़ादा
  १४. अपने इरादे से नमाज ख़त्म करना।
- अगर इनमें से कोई चीज जानकर या भूलकर रह जाए तो सज्दा सद्ख़  
करने से भी नमाज न होगी। दुबारा नमाज पढ़ना होगी।

#### नमाज के वाजिब

१. अल्हम्दु पढ़ना २. और इसके साथ कोई सूरः मिलाना
३. फर्जों की पहली दो रक'अतों में क़िर'अत करना ४. अल-हम्दु  
को सूरः से पहले पढ़ना ५. रुकू'अ कर के सीधा खड़ा होना
६. दोनों सज्दों के दर्मियान बैठना ७. पहला क़ादा करना
८. अन्तीयात पढ़ना ९. लाफ़ज़ सलाम से नमाज ख़त्म करना
१०. जुहर व अस्स में क़िर'अत धीरे से पढ़ना ११. इमाम के लिए



परिव व इशा की पहली दो रकअतों में और फज्र व जुमआ व ईदों और तरावीह की सब रकअतों में आवाज के साथ फिरअत करना

१२. विज्र में हुआ-कुत्त पढ़ना १३. दोनों ईदों में छः तक्बीर ज़्यादा करना।

**मस्अला** वाजिब में से अगर कोई वाजिब भूलकर छूट जाए तो सज्दा सहा करना वाजिब होगा। अगर जानते-बूझते किसी वाजिब को छोड़ दिया तो दोबारा नमाज़ पढ़ना वाजिब है। सज्दा सहा से भी काम न चलेगा।

### नमाज़ खराब करने वाली चीज़ें यानी मुफ़्तिदाते नमाज़

इन चीज़ों के करने से नमाज़ खराब हो जाती है।

- बात करना, चाहे थोड़ी हो या बहुत, जान-बूझ कर हो या भूलकर।
- जुबान से सलाम करना या सलाम का जवाब देना।
- छीकने वाले के जवाब में 'यर्हुमुकल्लाह' कहना।
- रज की खबर सुनकर 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिकुन' पुरा या थोड़ा-सा पढ़ना।
- अच्छी खबर सुनकर 'अल-हम्दु लिल्लाह' कहना।
- अजीब चीज़ सुनकर 'सुब्हानल्लाह' कहना।
- दुख-तक्लीफ की वजह से 'आह' और 'ओह' या 'ऊफ़' करना।
- अपने इमाम के सिवा किसी दूसरे को जुब्बा देना।
- कुरआन शरीफ़ देखकर पढ़ना।
- 'अल-हम्दु शरीफ़ या सूरः में ऐसी ग़लती करना, जिससे नमाज़ खराब हो जाती है, (जिस की तपस्मील वड़ी किताबों में लिखी है)
- अमले कसीर, यानी ऐसा काम करना, जिससे देखने वाला यह समझे कि यह शख्स नमाज़ नहीं पढ़ रहा है, मस्त्तन दोनों हाथ से काम करना।

- जान-बूझकर या भूलकर कुछ खाना-पीना।
- क्रिच्चे से सीना फिर जाना।
- दर्द या मुसीबत की वजह से इस तरह रोना कि आवाज़ में हुल्ल निकल जाए।
- नमाज़ में हँसना।
- इमाम से आगे बढ़ जाना।

### नमाज़ की सुन्नतें

१. तक्बीर तहरीमा के वक़्त दोनों हाथ कानों तक उठाना।
२. मर्दों को नाफ़ के नीचे और औरतों को सीने पर हाथ बांधना।
३. सना यानी 'सुब्हा-न-कल्लाहुम-म' आखिर तक पढ़ना।
४. 'अश्रूजु विल्लाह' (पूरी) और 'बिस्मिल्लाह' (पूरी) पढ़ना।
५. रुकूअ और सज्दा करते वक़्त, बल्कि हर एक रुकन से दूसरे रुकन में मुंताक़िल होने के वक़्त अल्लाहु अकबर कहना।
६. रुकूअ से उठते वक़्त 'समिअल्लाहु लिमन हमिदह' और 'रब्बना लकल हम्द' कहना।
७. रुकूअ में 'सुब्हा न रब्बियल अजीम' कम से कम तीन बार कहना और सज्दे में कम से कम तीन बार 'सुब्हा-न रब्बियल अज़ला' कहना।
८. दोनों सज्दों के दर्मियान और अन्तहीयात के लिए औरतों को बाएं पांव सीधी तरफ़ निकाल कर कुल्हों पर बैठना।
९. दलद शरीफ़ पढ़ना।
१०. दलद के बाद हुआ (हुआ मासूरः) पढ़ना।
११. सलाम के वक़्त दाएं-बाएं मुंह फेरना।
१२. सलाम करने में यह नियत रखे कि मैं फ़रिश्तों, मुक़त्तदियों और नेक जिन्नात जो हाज़िर हैं, उनको सलाम कर रहा हूँ और अगर मुक़त्तदी हो तो इमाम की भी नीयत करे।



### नमाज़ की मुस्तहब चीज़ें

- अगर चादर ओढ़े हो तो कानों तक हाथ उठाने के लिए मर्द को, तस्वीर के लिए शर्त क्रियाम है। जब क्रियाम न किया तो तस्वीर चादर से हाथ निकालना।
- जहाँ तक मुक्तिन हो, खांसी को रोकना।
- जम्हाई आए तो मुंह बन्द करना।
- खड़े होने की हालत में सज्दे की जगह और रुकूअ में कदमों पर और सज्दे में नाक पर और बैठे हुए गोद में और सलाम के वक़्त कंधे भी अज्ञान ही की तरह है, सिर्फ इतना फ़र्क है कि 'हय-य अलल फ़लाह' के बाद इक्रामत में दो बार 'क़द क्रामतिस्सला:' कहा जाना है।

तस्वीर तस्वीर नमाज़ के सही होने के लिए शर्त है और तस्वीर तस्वीर के लिए शर्त क्रियाम है। जब क्रियाम न किया तो तस्वीर तस्वीर सही न हुई और जब वह सही न हुई तो नमाज़ भी सही न होगी।

### इक्रामत या तस्वीर

जब जमाअत की नमाज़ खड़ी होती है तो पहले तस्वीर कहते हैं, वह 'फ़लाह' के बाद इक्रामत में दो बार 'क़द क्रामतिस्सला:' कहा जाना है।

### नमाज़ की मक्रूह चीज़ें

१. कोख पर हाथ रखना
२. आस्तीन से बाहर हाथ निकाले रखना
३. कपड़ा समेटना
४. जिम्म या कपड़े से खेलना
५. उंगलियां चटखाना
६. बाएं-बाएं गरदन मोड़ना
७. मर्द का जूड़ा गुंथ कर नमाज़ पढ़ना
८. अंगड़ाई लेना
९. कुत्ते की तरह बैठना
१०. मर्द को सज्दे में हाथ ज़मीन पर बिछाना
११. सज्दे में (मर्द के लिए) पेट को रानों से मिलाना
१२. बग़ैर उज़्र के चार ज़ानू (आलती-पालती मार कर) बैठना
१३. इमाम का मेहराब के अन्दर खड़ा होना
१४. सफ़ से अलाहिदा अकेले खड़ा होना
१५. सामने या सर पर तस्वीर होना
१६. तस्वीर वाले कपड़े में नमाज़ पढ़ना
१७. कंधों पर चादर या कोई कपड़ा लटकाना
१८. पेशाब-पाखाना या ज़्यादा भूख का तक्राज़ा होते हुए नमाज़ पढ़ना
१९. सर खोल कर नमाज़ में खड़ा होना
२०. आखें बन्द कर के नमाज़ पढ़ना।

### बहुत ज़रूरी मसूअला

बहुत से अनजाने लोग मस्जिद में आकर इमाम को रुकूअ में पाते हैं, तो जल्दी के ख्याल से आते ही झुक जाते हैं और इसी हालत में तस्वीर तस्वीर कहते हैं। उनकी नमाज़ नहीं होती, इसलिए कि

### नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

जब नमाज़ पढ़ने का इरादा करे तो पहले अपना बदन हर तरह से पाक-व-साफ़ करे और पाक कपड़े पहन कर पाक जगह पर किये की तरफ़ मुंह करके खड़े हो, फिर जो नमाज़ पढ़नी है, उसकी नीयत करे, फिर दोनों हाथ इस तरह कानों तक उठाए कि अंगूठे कानों की लों के सामने हों, उंगलियां खुली रहें। इसके बाद तस्वीर तस्वीर यानी अल्लाहु अक्बर (अल्लाह सबसे बड़ा है) कह कर दोनों हाथ नाफ़ के नीचे इस तरह बांधे कि सीधे हाथ की हथेली बाएं हाथ की हथेली के पिछले हिस्से पर रहे और अंगूठे और छंगुलियां के हल्के से बाएं हाथ के पट्टे को पकड़ ले और बाक़ी तीन उंगलियां कलाई पर बिछी रहें और नज़र सज्दे की जगह पर रहे, हाथ बांध कर सना तअव्जुज-तस्मीयह और सूरतुल फ़ातिहा पढ़ें।



सना

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَبِأَرْكَاسِكَ  
وَعَلَى بَيْتِكَ وَلَا إِلَهَ غَيْرُكَ

सुबहा न क अल्लाहुम व बिहमदि क व तवारकसु क व तैअि  
जहु क व लाइला ह मरुक •

तअव्जुल

أَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

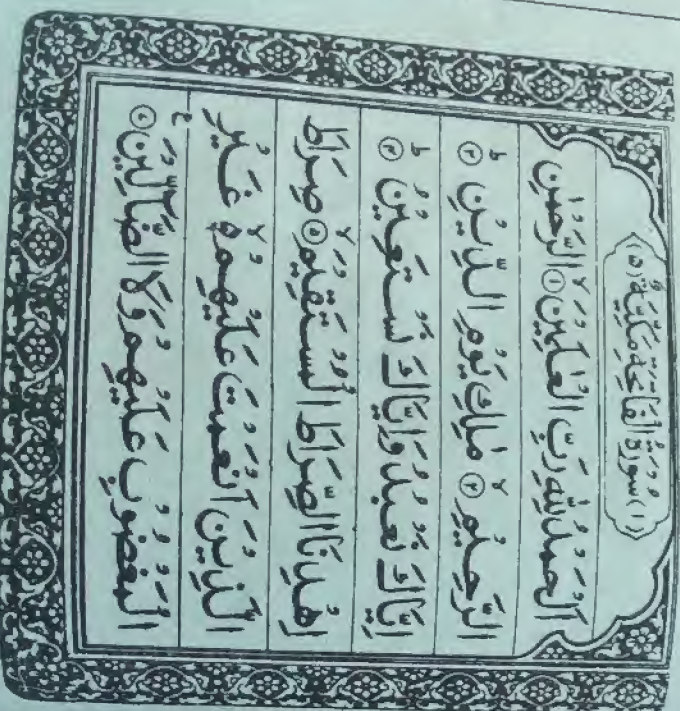
अ ऊजु विल्लाहि मिनशैतानिर रजीम •

तस्मीयह

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

विस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

सूरतुल फातिहा

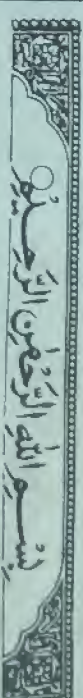


• विस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

अलहजु लिल्लाहि रब्बिल आ ल मीन • अर्हमानिर रहीम •  
मालिकि यौमिदीन • ई या क नअ जुदु व ई या क नम त अीन •  
इहदिनस्मिरानल मुस्तकीम • मिनातल्लाजी न अनअम न अलहिम  
मीरिल मादवि अलौहिम वलदाल्लिन • (आमीन)

सूरतुल फातिहा के वाद धीरे में आमीन कहे और कुर आन अरफ़ कौ  
कोई सूरः या कम से कम तीन छोटी आयतें या इनके वरावर की एक  
बड़ी आयत पढ़े, —यहां चन्द सूरतें लिखी जाती हैं ।

सूरतुल नास

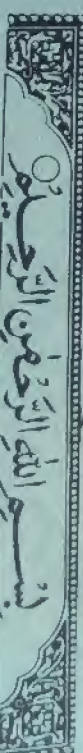


قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَهِ النَّاسِ ۝  
يُوسُفُ ۝ ذِي صُدُورِ الْمُنَاسِقِ ۝ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝

• विस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

• कुल अऊ जु विरब्बिन नास • मलैकिन नास • इलाहिनास •  
मिन शरील वस्वासिल खनास • अल्लाजी युवसविमु फी सुदूरिनास  
• मिनल जिन्नति वनास •

सूरतुल फलक



قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝



مَنْ شَرَّ عَاقِبَتِي إِذَا وُقِيَ ۚ وَصْنٌ شَرٌّ لِّلْقُلُوبِ فِي

الْعَقْلِ ۚ وَصْنٌ شَرٌّ حَاسِدًا إِذَا حَصَدَ ۚ

- विमिल्लाहिर रहमानिर रहीम •
- कुल अऊजु बिरखिल फलक • मिन शारि मा खलक •
- मिनशारि गामिकिन इजा वकव • व मिन शारिन नफफामानि फिल उकद • व मिन शारि हामिदिन इजा हसद •

सुरतुल इखलास

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۚ اللَّهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۚ وَلَمْ

يُولَدْ ۚ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۚ

- विमिल्लाहिर रहमानिर रहीम •
- कुलहुदल्लाहु अहद • अल्लाहुस्समद • लम यलद • व लम यू लद • वलम यकुल्लाहु कुकुवन अहद •

सुरतुल लहव

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَيَّنَتْ يَدَايَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۚ مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ كَالُهُ وَمَا

كَسَبَ ۚ سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۚ وَامْرَأَتُهُ

حَسْبَاءٌ لَّهِ الْخَطْبَاءُ ۚ فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۚ

- विमिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

- तबयत यदा अभी ल ह विवै व तब • मा अगना अनहु मालुहु व
- कसव • स यस्ला नारन जा त ल ह विवै • यम र अ तुद हमा नल ह तब • फी जीदिहा हबुम मिमसद •

सुरतुल नस

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ۚ وَرَأَيْتَ الشَّامَ

يَدْخُلُونَ فِي دِينِكِ ۚ أُولَٰئِكَ لَمْ يَعْلَمُوا

دِينَكَ ۚ وَاللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۚ

- विमिल्लाहिर रहमानिर रहीम •

- इजा जा अ नसरल्लाहि वल फतहु • व र अंतजा म यद खुलु न फी दीनिल्लाहि अफवाजा • फसखिह बिहमि रखि क यस्तयाफिरहु इबहु का न तावाया •

सुरतुल काफिरून

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۚ لَا أَجِدُ مَا تُعْبُدُونَ ۚ وَلَا

أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ۚ وَلَا أَتَىٰ عَلَىٰ مَا عَابَدْتُمْ ۚ وَلَا

أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ۚ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۚ



● विस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम ●

- कुल या अय्युहल काफिरन
- ला अउबुदू मा तअबुदून
- अनतुम आबिदू न मा अउबुद
- वला अना आबिदुम मा अ
- वला अनतुम आबिदू न मा अउबुद
- लकुम कीनुकुम
- यदीन

**सूरतुल योसर**

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَنْشَأْنَاهُ كَوْنًا فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ  
إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ

- विस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
- इन्ना अश्राना कल कोसर
- फ़सल्लि लिऱब्कि क वनहर
- शानि अ क हुवल अब्तर

**सूरतुल माऊन**

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَوَيْتَ الْإِنْسَانَ بِكَذِّبٍ بِالْذِّبِينِ ۚ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ بِأَيْدِي  
أَيْدِيهِمْ ۖ وَلَا يَجِئُ عَلَى طَعَامِ الْمَسْكِينِ ۖ فَوَيْلٌ  
لِّلْمَصْلِيِّينَ ۖ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۖ  
الَّذِينَ هُمْ يُرَآؤُونَ ۖ وَيَسْعَوْنَ الْيَحَاؤُونَ

● विस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम ●

- अ र ऐ तल्लजी युक्रिजिबु बिददीन
- फ़ जालिकल्लजी यदुअ
- अ र ऐ तल्लजी युक्रिजिबु बिददीन
- फ़ जालिकल्लजी यदुअ
- वला यदुअ अला तअमिल मिरकीन
- फ़ यलुल
- अल्लजी-न हुम अन सलतिहिम साहून
- अल्लजी-न हुम युराऊ-न
- व यम नअनल माअून

**सूरतुल कुरैश**

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ ۖ فَرِحَ الْشَّيْءُ الْوَصِيِّينَ  
فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ۖ الَّذِي أَظْهَرَهُمْ  
مِنْ جَوْفٍ ۖ وَآمَنَهُمْ مِنْ خَوْفٍ

- विस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम
- लि-इलाफ़ि कुरैशिन
- ईलाफ़िहिम रिह-ल-तश-शिताइ वस्फ़
- फ़लयअ-बुदू रय-व हाजल वैत
- अल्लजी अत-अ-महुम मिन
- ज़ाशिव व आ-म-नहुम मिन खोफ़

**सूरतुल-फ़ाल**

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَلَمْ تَرَكَيْتَ فَعَلَ رَبِّكَ بِأَسْعَبِ الْفِيلِ ۖ أَلَمْ يَجْعَلْ  
يَدَهُمْ فِي تَضْيِيلٍ ۖ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۖ

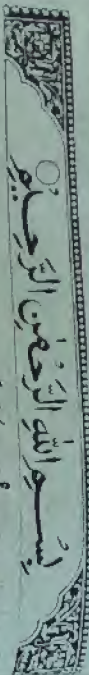


بِهِمْ بِحَبَابٍ ذَرَّةً مِنْ سَجْدَةٍ يَنْجِبُهُمْ بِجَبَلٍ ۖ جَعَلْنَاهُمْ كَصَفِيٍّ ۖ تَالُوتُ ۝

● विमिल्लाहिर रहमानिर रहीम ●

- अलम त-र के-फ फ-अल रबु-क वि-असहाविलफील
- अलम यजअल कैदहुम फी तजलीलिव ● व अरस-ल अलैहि
- तैरन अवाबील ● तमीहिम बिहिजा-रनिम मिन मिज्जील
- फ-ज-अ-लहुम क-असिम मअ-कूल ●

**सुरतुल हु-म-ज**

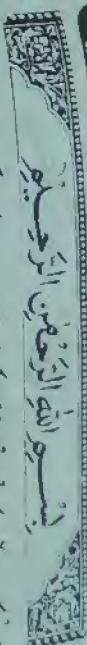


يَا أَيُّهَا الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ  
 الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ  
 الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ  
 الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ الْغَاثُ الْغَاثُ ۚ

● विमिल्लाहिर रहमानिर रहीम ●

- वेंलुल्लिकुल्लि हु-म-जनिन लु-म-जः ● अल्लाजी ज-म-अ मालं
- व अर-द-दह ● यहसबु अन-न मालहु अख-ल-दह ● कल्ला लयुम्बजन्
- न फिल-हु-त मह ● व भा अदरा-क मलहु-त मह ● नारल्लाहिल म
- क दनु- ● ललाती ततलिअु अलल अफ-इदह ● इन्नहा अलैहिम मुअ
- स-दह ● फी अ-म-दिम मुमद-द-दह ●

**सुरतुल अन्न**



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 وَالْعَصِي ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُفٍ ۚ  
 وَالصَّلَاحِ ۚ وَتَوَّصَّوْا بِرَبِّكُمْ ۚ وَتَوَّصَّوْا بِالصَّبْرِ ۚ

● विमिल्लाहिर रहमानिर रहीम ●

- वल-अनि ● इन्नल-इन्मा-न लफी खुस ● इल्लाज्जी-न आपन व
- अमिलुस्मालिहाति व त-यामां विल्दक्कि ● व त-यामां विम्बव ●
- मिमाल के तौर पर चन्द सुरते दी गई है। इसी तरह कुरआन भरीफ
- की कोई सी भी एक सुरः या एक वही आयत या तीन छोटी आयतें
- पढ़ी जा सकती हैं। इसके बाद **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** अल्लाहु अकबर कहना
- हुआ रुकू में जाए और ३, ५, या ७ बार कहें **سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ**
- सुव्हा न रबिबल अजीम। फिर **رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ** सुव्हा न रबिबल अजीम।
- लिमन हमिदह कहना हुआ सीधा खड़ा हो जाए। अकल्ला नमाज पढ़
- रहा हो तो यह भी पढ़े **رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ** रबना लकल हमद।
- फिर अल्लाहु अकबर कहना हुआ मज्म में चला जाए और ३, ५ या
- ७ बार कहे **سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ** सुव्हा न रबिबल अजीम,
- इसके बाद अल्लाहु अकबर कहना हुआ बैठे। फिर अल्लाहु अकबर
- कहता हुआ दूसरा सज्दा करें। पहले सज्दे की तरह तस्वीह पढ़कर
- अल्लाहु अकबर कहता हुआ खड़ा हो जाए। इस तरह एक रुकूअन
- नमाज पूरी हो गई। दूसरी रुकूअन में विमिल्लाहिर रहमानिर रहीम
- पढ़कर सुरतुल फातिहा पढ़े और पहली रुकूअन की तरह बाइ
- अरकान पुरे करे और बैठ कर **तशह हुद** पढ़े :



الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لَكَ شَاكِرِينَ  
وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهَتِهِمْ كَاذِبُونَ  
الَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهَتِهِمْ كَاذِبُونَ  
الَّذِينَ هُمْ عَنْ آلِهَتِهِمْ كَاذِبُونَ

अतहीवानु लिल्लाहि वस्म ल वानु वत्तियेवानु अस्मलामु अलै  
क अय्युहन्नवीयु व रहमतुल्लाहि व व र कानुह अस्मलामु अलैना  
व अला शिवादिल्लाहिम सालिहीन अशहदु अल्लाइला ह इल्लल्लाहु  
व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुह व रसूलुह •

तशह इद के वाद - दरुद शरीफ और हुआए मासूर: पढ़ी जाती है  
लेकिन अगर दो से ज्यादा रकअतें नमाज पढ़ रहा हो तो तशह इद  
पढ़कर खड़ा हो जाए और इसी तरीक़े से बाकी की नमाज पूरी  
करके आखरी रकअत में बैठकर पहले - तशहइद - फिर दरुद  
शरीफ और हुआए मासूर: पढ़े।

### दरुद शरीफ

رُوَدُ شَرِيفِ اللَّهِ صَلَّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ  
مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ  
إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ اللَّهُمَّ يَا رَبِّ  
عَالَمِينَ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى  
إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिवै व अला आलि मुहम्मदिन कमा

सल्लै त अला इबराही म व अला आलि इबराही म इन क हमीदुम्मजीद •  
अल्लाहुम्म वारिक अला मुहम्मदिवै व अला आलि मुहम्मदिन कमा  
वारक त अला इबराही म व अला आलि इबराही म इन क हमीदुम्म  
मजीद • अब पढ़े-

### हुआए मासूर:

اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا  
كَبِيرًا وَلَا أَغْفِرُ إِلَّا لَكَ  
وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِكَ وَرَحْمَتِكَ  
إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

अल्लाहुम्म इन्नी जलम्नु नफ्सी जुलमन कर्मीर-व-बला  
याफिरुज्जुनु-व इल्ला अन-त फ़ग़िर ली माफ़ि-र-त्तम मिन अल्दि क  
वर्हमनी इन-न क अन्तल माफ़िर-रहीम •

○ दरुद शरीफ के वाद की एक हुआए मासूर: यह भी है - कोई एक  
पढ़ ले। ○

وَعَارِبَاتِ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَرَحْمَتِي  
دُرِّيَّةً رِيًّا وَتَقَبَّلْ دُعَائِي ۝ رَبِّ اغْفِرْ لِي  
وَالْإِسَاءَةَ الَّتِي كُنتُ أَفْعَلُهَا وَإِلْمَؤُمِّيَّتِي الَّتِي  
كَنتُ أَفْعَلُهَا

○ रबिज-अल नी मुकी मस्मलानि व मिन जुरीयनी रव-वना व  
तकब्बल हुआ ○ रब्बनाफ़िर ली व लिवालिदय-य व लिल मुअ् मि  
नी-न यौ-म यकूमल हिसाव •

यहाँ तक पढ़ कर पहले बाएँ फिर बाएँ सलाम कहकर नमाज खत्म  
करे। ○

○ 'अस्मलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह' ○

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لَكَ شَاكِرِينَ

○ सलाम कहते वक़्त यह जहन में रखे कि मैं फ़रिशतो, इमाम और



○ नमान पढ़ने के बाद निम कदर हो सक अल्ताह तथाला का जि  
करे और बहुत आजीजी से हुआ मांगे । दो हुआएं लिखी जानी है

● नमोज के बाद की दुआ ●

بہتر را کر کے مائے اللہم انت السلام ومیت السلام والیتک یزجع السلام حینما رہتا بالسلام وا دخلنا اذا السلام متبا کر کے رہتا وتعالیت یاد النجلا والاکرام

★ अल्पाहुम-म अन्तर्मन्त्राणु व भिन्निष्मन्त्राणु व इत्ये क यन्त्रिभुम्भन्त्राणु  
हस्त्रिन्ना रत्नना विष्मन्त्राणि व अर्धविन्त्रा दारम्भन्त्राणि त्वारक न  
रत्नना व तन्त्रात्त या जल-जलात्त वल इकराम ●

رَبَّنَا إِنِّي فِي الدُّنْيَا حَسَنَةٌ وَفِي الْآخِرَةِ  
حَسَنَةٌ وَفِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝

★ रघुना आतिना फिइन्ना ह-म-नतंव वकिल आधिगति ह-म-नतंव वकिना अज्ञावन्नार ●

इशा की नमाज़ में फ़र्ज और सुन्नतों के बाद विन्न की नमाज़ पढ़ना

याजव ह। विन्न का तान रकअता की पहली दो रकअतें' और सब नमाजों की तरह अदा करें। दूसरी रकअत में शहदुद यानी अतहीयात पढ़ कर खड़ा हो जाए और हाथ बांध ले। तीसरी रकअत में मूरः फातिहा और कोई सी मूरः पढ़कर रुकू में जाने से केवल अल्लाहु

अकबर कहते हुए दोनों हाथ कानों तक उठाए और बोले कि  
दुआएं कुनूत पढ़ें :

नम्राजें द्वित्र की तीगरी रकअत में पड़ी नांके

دَعَا قَوْمَكَ إِلَهُهُمْ إِنْ شَاءَ عَيْنُكَ وَسَمِعَ قَوْمُكَ  
 وَتَوَّعْنَاهُ وَتَوَكَّلْ عَلَىكَ وَتُبْنِي عَيْنُكَ الْخَيْرَ  
 وَتَسْكُنْ لَكَ وَلَا تَكُنْ لَكَ وَتَكُنْ لَكَ مِنْ يَجْزِلِكَ  
 الْإِلَهُمْ إِنْ شَاءَ عَيْنُكَ وَتَكُنْ لَكَ وَتَكُنْ لَكَ  
 تَكُنْ لَكَ وَتَكُنْ لَكَ وَتَكُنْ لَكَ وَتَكُنْ لَكَ  
 إِنْ عَدَّ إِلَهُاتُ الْكَافِرِينَ مَا حَسِبُوا

अल्ला हुम् न इना नान्ति अतु क व नन्ता फ़ि क व नु' मिनु वि क  
व न त वक्कलु अल क व नुम्नी अलकल ख़र ● व नशकुर क वला  
नशकुर क व नखलओ व नन् रुकु मय्यकनुर क अल्ला हुम् न ईया क  
नअवुद व ल क नुमल्ली व नन्जुदु व इल क नअा व नहफ़ेदु व  
नन् ज रह म त क व नख़ा अजा व क इन् न अजा व क विल  
कुफ़कारि मुल्हिक ●

इस दुआ के बाद रुकु और सज्दे करें फिर अन्तीयात, दस्तद शरीफ और दुआए मासूरः पढ़ कर सलाम करें।

जुमआ की नमाज़ फ़र्ज है, जबकि ये शर्तें पायी जाएं—

१. मुष्माफिर न होना २. तन्दुरुस्त होना ३. गुलाब न होना  
४. शहर या कस्बे का होना ५. मर्द होना ६. अक्ल वाला और  
बालिग होना ७. अंधालांछा न होना ८. नुपुआ के दिन मुरज



का ढल जाना यानी जुहर का वक्त्र आ जाना ९. खुल्ना

१०. जमाअत यानी इमाम के अलावा कम से कम तीन आदमों जमाअत में हों।

**मसूअला** पहली अज्ञात से खरीना-वेचना और कारोबार छोड़ कर मस्जिद में आना वाजिब है। जब इमाम खुल्ने के लिए चले, तो सब लोग बिल्कुल खामोश होकर खुल्ना सुनें। खुल्ने के वक्त्र वात करना, नमाज पढ़ना, दस्त शरीफ या तबीह या और कुछ पढ़ना, किसी को डांटना, नमीहत करना जायज नहीं।

हजरत ओम विन औस रजि० फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व आलैहि व सल्लाम ने फरमाया कि जिसने जुमआ के दिन अपनी बीवी को गुस्ल कराया (यानी सोहवत कर के उस पर गुस्ल वाजिब कर दिया और इस तरह अपने नफ्स और अपनी नजर को महफूज कर लिया) और खुद भी गुस्ल किया और जुमआ के लिए जल्दी चला गया (कि खुल्ने से पहले पहुंच गया) और शुरु से खुल्ना सुना और पढ़ल गया, सवार न हुआ और इमाम के करीब बैठ आर ध्यान से खुल्ना सुना और वेंकार का काम न किया, न वेंकार वात की, तो उसके लिए हर कदम पर पूरे साल के रोजों और साल भर की रातों को नमाज में क्रियाम करने का सबाब मिलेगा।

जुमआ की १४ रकअतें हैं जिनकी तफसील यह है—  
चार सुन्नतें, फिर दो फर्ज, फिर चार सुन्नतें, फिर दो सुन्नतें, फिर दो नफ़ल।

### याद रखने वाली बातें

- विन्न नमाज के बाद तीन बार यह हुआ पढ़ें :  
□ मुहानल मलि किल कुहूस □
- तीसरी बार कदरें बलन्द आवाज से कहे और कुहूस की 'द' को खूब खींचें।

- फ़ज्र और मग़रिब की फ़र्ज नमाजों के बाद क्रिमा में यात किये जायें सात बार पढ़ें :

□ अल्लाहुम-म अज़िर्नी मिनन्नार □  
फ़र्ज नमाज का मलाफ़ फेर कर

दाहिना हाथ पेशानी पर रख कर पढ़ें :  
لَسْمُ لِلّٰهِ اَلْبِيْ اَلْاَلَةِ  
اَلْاَلَةِ اَلْاَلَةِ اَلْاَلَةِ اَلْاَلَةِ  
اَلْاَلَةِ اَلْاَلَةِ اَلْاَلَةِ اَلْاَلَةِ  
विस्मिल्लाहिल्लाजी ला इला-ह-इल्ला हुवरहमानुरहीम अल्लाहुम-म अज़हव अन्निल हम-म बल-हुज-न •

### कुछ किर्त के बारे में

**मसूअला** फ़र्जों की सिर्फ़ पहली और दूसरी रकअत में अल्हम्दु शरीफ़ के बाद कोई सूरः या उसकी जगह कुछ आप्तें पढ़ी जाती हैं और तीसरी और चौथी रकअत में सिर्फ़ अल्हम्दु शरीफ़ पढ़ी जाती है। सुन्नत, नफ़ल या विन्न पढ़ने हों, तो हर रकअत में अल्हम्दु शरीफ़ के साथ कोई सूरः या कुछ आप्तें मिलाएँ।

**मसूअला** नमाजों में कुरआन शरीफ़ उलटी तरीक़ा से पढ़ना मकरूहे तहरीमी है जैसे पहली रकअत में कुल हुवल्लाह और दूसरी में तब्बत यदा पढ़ना।

**मसूअला** यह भी दुरुस्त नहीं कि पहली रकअत में छोटी सूरः और दूसरी में बड़ी सूरः पढ़ी जाए जैसे पहले कुल हुवल्लाह फिर कुल अऊजु बिरबिल फ़लक।

### बुरख़ नमाज के बारे में

**जमाअत की अहमियत**  
जमाअत के साथ नमाज पढ़ने की बड़ी ताकीद आई है—



फर्ज नमाजे जमाअत के साथ ही अदा करनी चाहिये। इसकी वही फजीलत और बहुत सबाब है। हदीस शरीफ में है कि वा जमाअन नमाज का सबाब **२७** गुना ज्यादा है, और हर हालत में तनहा नमाज पढ़ने में वाजमाअन नमाज पढ़ना बेहतर है। हुजुरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कभी जमाअत तर्क नहीं की—वाज आलिमों ने जमाअत के साथ नमाज पढ़ने को वाजिव कहा है। पहली सफ में नमाज पढ़ना तो और भी अफजल है—यह सफ उला है और तकवीरे उला यह है कि इमाम की किरात से पहले नमाज की नीयत करके हाथ बाँध लिये जाएँ। तकवीरे उला के छूट जाने पर मत्ताल करना चाहिये।

• वागेर उन्न के जमाअत छोड़ने वाला गुनहगार और जमाअत छोड़ने की आदत डालने वाला फासिक है।

• जुमआ और ईदैन की नमाज वागेर जमाअत नहीं होती।

• रमजान में नमाजे तरावीह की जमाअत सुन्नते किफाया है यानी एलाका के चन्द लोगों के अदा कर लेने से सारे लोग वरिउजिम्मा हो गए बरना सब गुनहगार होंगे—यही हुक्म नमाजे जनाजा का है।

• रमजान शरीफ में विव की नमाज वाजमाअत पढ़ना मुस्तहब है।

### दुरुस्त सफ बंदी

अक्सर लोग जमाअत के आदाव का लेहाज नहीं करते—यह बहुत नुक्सान की बात है। इन बातों का ध्यान रखना जरूरी है—

- इमाम के करीब या अगली सफों में जाने के लिये पहले से बैठे हुए लोगों को हटा हटा कर या फलांग कर आगे नहीं जाना चाहिये।
- सफ में मिलकर-कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हों—खाली जगहों में शौतान घुस जाता है।
- सफ बराबर रखें—आगे पीछे न खड़े हों—इससे आपस में फूट पड़ती है।

- हमेशा दरमियान यानी बीच से सफबंदी करना चाहिये—किनारों से खड़े होना बहुत नुक्सान की बात है।
- जब तक अगली सफ पूरी न हो जाए पीछे सफ न बनावें।

### औक़ाते नमाज

नमाज हमेशा अव्वल वक़्त में पढ़ना चाहिये यानी नमाज का वक़्त होते ही नमाज की अदाएंगी की फिक्र करे, ताज़ीर न करे—देर करने से जमाअत छूटेगी—नमाज मक़रूह हो सकती है और क़जा होने का ख़दशा रहता है।

### क़जा नमाज़ों

नमाज क़जा करना वड़े गुनाह की बात है। अगर नमाज क़जा हो ही जाए तो उसको जल्द से जल्द अदा कर ले। अगर किसी ने पिछली नमाज़ें क़जा की हों यानी नहीं पढ़ी हों चाहे वह बीस तीस साल की ही क्यों न हों तो सब अदा करे—मुदत याद न हो तो वह नीयत करे कि उसके जिम्मा जो सबसे अव्वल दिन की नमाज (जैसे जुहर या अस्र या दूसरी नमाज) बाक़ी है—उसको पढ़ता है—मिसाल के तौर पर एक पूरी नीयत इस तरह होगी—

मैं नीयत करता हूँ या करती हूँ चार रअक़त नमाज फ़र्ज जुहर की क़जा जो सबसे अव्वल मेरे जिम्मा है—वास्तं अल्लाह तआला के, रख मेरा काअवा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर •

क़जा सिर्फ़ फ़र्ज और विव नमाज़ों की होती है—सुन्नतों या नफ़लों की नहीं •

जो नमाज़ें घर पर क़जा हुई हों वह पूरी पढ़ी जाएंगी चाहे सफ़र में पढ़े (सफ़र कम से कम ४८ मील का होता है) और सफ़र के दौरान क़जा होने वाली जुहर—अस्र और इशा की फ़र्ज नमाज़ों की क़जा दो रअक़त करके ही पढ़ी जाएंगी चाहे घर पर पढ़े—फ़ज्र और मग़रिब



की नमाजों की क़ज़ा दो और तीन ही रकअत पढ़नी होगी। फ़ज्र की क़ज़ा नमाज़ अगर उमी दिन ज़वाल से पहले पहले पढ़ रहा हो तो सुन्नत और फ़र्ज दोनों पढ़ें। ●

### नमाज़े क्रस् या मुसाफ़िर की नमाज़

जो कोई ४८ मील या सवा सततर किलोमीटर के सफ़र की नीयत से अपने एलाके से निकले तो उसपर फ़र्ज नमाज़ों की क्रस् ज़रूरी है - और क्रस् यह है कि जुहर, अस् और इशा की फ़र्ज नमाज़ों दो दो रकअतें करके अदा करे लेकिन अगर मुक़ीम इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ रहा हो तो चार रकअत ही पढ़े। फ़ज्र और मगरिब की फ़र्ज नमाज़ों की क्रस् नहीं होती। सफ़र में किसी जगह १५ दिन या उससे ज़्यादा ठहरने की नीयत करले तो फिर वह मुसाफ़िर नहीं—उसको तमाम नमाज़ें पूरी पढ़नी होंगी। इशा की ३ रकअत नमाज़े विषा वाजिब है जो मुक़ीम या मुसाफ़िर सबको पढ़ना लाज़मी है। मुसाफ़िर के लिये सुन्नतों और नफ़लों की सहूलत है—पढ़ ले तो बहुत ज़्यादा सवाब का मुस्तिहिक होगा—न पढ़े तो हर्ज नहीं। ●

### मरीज़ की नमाज़

नमाज़ इसलाम का बहुत बड़ा फ़रीज़ा है और किसी भी हालत में माफ़ी नहीं—चाहे सफ़र में हो, कोई मर्ज हो, मुख में हो या तकलीफ़ में हर हालत में नमाज़ पढ़ना फ़र्ज है—बीमारी बड़ी हो और खड़े होने के लाएक न हो तो बैठ कर पढ़े—बैठ भी नहीं सकता हो तो लेंटे लेंटे इशारे से पढ़े। नमाज़ का तर्क करना गुनाह अजीम है चाहे मुसीबतों के पहाड़ ही क्यों न टूट पड़े हों। ●

### सज्दा सहव

नमाज़ पढ़ने में कभी भूल भी हो जाती है—उसकी तलाफ़ी के लिये आख़री रकअत में अतहीयात पढ़ कर दाहिनी तरफ़ सलाम फेर कर

दो सज्दे किये जाते हैं—इसको मज्ना सहव यानी भूल का मज्ना कहते हैं। सज्दा सहव वाजिबाने नमाज़ से एक या कई वाजिब के भूल से छूट जाने पर किया जाता है—लेकिन नमाज़ के फ़राइज़ से कोई फ़र्ज छूटा हो या जान बूझ कर कोई वाजिब तर्क किया हो तो नमाज़ दोहराना होगी—सज्दा सहव से काम नहीं चलेगा। सज्दा सहव एक ही बार (२ सज्दे) किया जाता है चाहे एक या ज़्यादा वाजिब छूटे हों। ●

### सज्दा तैलावत

कुरआन शरीफ़ में चौदह जगहें ऐसी हैं जिनको पढ़ने या सुने से सज्दा वाजिब हो जाता है—इसी को सज्दा-ए-तैलावत कहते हैं। सज्दा तैलावत में सिर्फ़ एक ही सज्दा किया जाता है। ●

### नमाज़े तौबा

हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु अनहु फ़रमाते हैं कि हुज़रे अकरम सललल्लाहु अलैहिक्सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख्स से भी कोई गुनाह हो जाए तो जुज़ करके दो रकअत नमाज़ पढ़े और फिर अल्लाह से माफ़िरत तलब करे तो अल्लाह तआला उसकी माफ़िरत कर देगा। नमाज़े तौबा की नीयत इस तरह करे :

### नीयत

नीयत करता हूँ दो रकअत नफ़ल सलात तौबा की, वास्ते अल्लाह तआला के रख मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

### हर मुख़िकल के लिये नमाज़

जब कोई परेशानी, रंज, मुसीबत या ख़ौफ़ हो—सख्त आंखी या जलजला हो, बिजली गिरे, तूफ़ान या हैजा फैले या दुश्मन का डर हो तो अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करे और नफ़ल नमाज़ें अपने अपने घरों में वग़ैर जमाअत के पढ़े और नमाज़ के ज़रया अल्लाह तआला से



मर्द चाहें—हजमत हुज्जफा मजिअल्लाहु अनहु फरमाने है कि मुसुलमान मल्लल्लाहु अल्लेहि वसल्लम को जब कोई मुश्किल दरपेश हो थी तो इत नमाज में लग जाते थे । ●

### मर्द व औरत की नमाज का फर्क

औरत भी उसी तरह नमाज पढ़ें जैसे नमाज पढ़ने का तरीका पुरुषों का है, लेकिन कुछ चीजों का मर्द व औरत की नमाज में फर्क है, वह नीचे लिखी जाती है—

१. तक्बीरे तहरीमा के वक़्त मर्दों को चादर चाँदर से हाथ निकाल कर कानों तक उठाना चाहिए और औरतों को हर हाल में चाँदर ही निकाले कंधों तक उठाना चाहिए । ○
२. तक्बीरे तहरीमा के बाद मर्दों को नाफ़ के नीचे हाथ बाँधे चाहिए और औरतों को मोने पर । ○
३. मर्दों को बाएँ हाथ की कलाई पर बिछा देना चाहिए और औरतों को दाहिनी दहली बायीं दहली के पिछले हिस्से पर रखना चाहिए । ○
४. मर्दों को रुकूअ में अच्छी तरह झुकना चाहिए कि सर और पीयाँव हो जाएँ और औरतों को सिर्फ़ इतना झुकना चाहिए कि पीयाँव हो जाएँ और औरतों को पढ़ें बाएँ हाथ । ○
५. मर्दों को रुकूअ में उंगलियाँ फैला कर घुटनों पर रखना चाहिए और औरतों को बाएँ हाथ फैला कर रखना चाहिए । ○
६. मर्दों को रुकूअ की हालत में कुहनियाँ पहलू से अलग रखनी चाहिए और औरतों को पहलू से मिला कर रखना चाहिए । ○
७. मर्दों को सज्द में घुट रानों से और बाजूं बगल से जुदा रखनी चाहिए और औरतों को मिला हुआ । ○

८. सज्द में मर्द की कुर्तियाँ जमीन में उठी हो और औरतों की जमीन पर बिछी हों । ○

९. मर्दों को सज्द में दोनों पैर उंगलियों के बल खड़े रखना चाहिए, मगर औरतों को दोनों पाँव बाहर की तरफ़ निकलने होंगे । ○

१०. मर्दों को बैठने की हालत में बाएँ पाँव पर बैठना चाहिए और दाहिने पाँव को उंगलियों के बल खड़ा रखना चाहिए और औरतों को दोनों पाँव दाहिनी तरफ़ निकाल कर बाएँ मुरनि (घुनई) पर बैठना चाहिए । ○

११. औरतों को किसी वक़्त चलना आवाज़ में किरअन करने का इस्तिथार नहीं, उनको हर वक़्त धीमी आवाज़ में किरअन करना चाहिए । ○

### इमामत के बारे में

इमामत का मय से ज्यादा हकदार वह आदमी है, जो मोःनद लोगों में सब से ज्यादा ममअलों का ज्ञान रखता हो, यशने कि कुरआन शरीफ़ ऐसा ग़लत न पढ़ता हो जिसे नमाज न हो । इसके बाद मय से ज्यादा हकदार वह है जो कुरआन का मय से ज्यादा ज्ञान हो । इसके बाद वह जो मय से ज्यादा ज्ञान हो, जिसे परहेज़ करने वाला हो, इसके बाद वह जिस की उम्र मय से ज्यादा हो, इसके बाद वह जिसके अज़लाक मय से अच्छे हो, इसके बाद वह जो ज्यादा ख़ुदमुरत हो, इसके बाद वह जो नमली शराफ़त में बड़ा हुआ हो ।

**मसूअला** बिद्अती, फ़ासिक, जाहिल, देहानी और ना-पाकी में एहतिथात न करने वाले अंधे के पीछे नमाज मसूअल है ।

**मसूअला** जिस मस्जिद का इमाम मुकर्रर है, इमामत का हकदार वही है, चाहे कोई शख्स उससे ज्यादा अलिम या अच्छा कारी मस्जिद में हाज़िर हो गया हो, हां, अगर इमाम इजाजत दे दे तो दूसरी बात है ।



भरभराला  
मुददी से

**समस्या**

**महामा**

**महाभारत**

**मसुआला**

मसुआला

**મમ અભા**  
**જો**

रमजान शरीफ के रोजे रखना हर वालिा मर्द व औरत पर फ़र्ज है और इसलाम के पाँच अरकान में से एक। ○

سَهْرَ مَضَانِ الْمَسَارِكِ قُرْصَاةِ الْكَلَامِ يَا اللَّهُ وَفِيهِ

بَنِي إِدْرِيسَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْكَابِرُ ط

16

अन्ता हुमा ल-क-मुभनु व विंका आमनु व अन्तिह तवकलनु व

तरावीह की नमाज़

तरावीह की नमाज़ रमज़ान में इशा के बाद पढ़ी जाती है। यह बीस रक़अत दस सलामों के साथ सुन्नत है। बेहतर यह है कि यह ज़माअत के साथ पढ़ी जाए। हर चार रक़अत के बाद थोड़ी देर आराम करना पसंदीदा है। जितनी देर आराम के लिए बैठे, उस वज़न यह नखीह पड़े।

سُبْحَانَ ذِي الْعَرْشِ وَالْعَظِيمَةِ وَالْهِيبَةِ وَالْقُدْرَةِ الْبَرِّ بِأَمْرِ  
وَالْجَبَرُوتِ سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْحَيِّ الَّذِي لَا يَنَامُ وَكَذَلِكَ  
مُسْتَجَابٌ وَمَنْ رَغِبْنَا وَرَثَةُ الْمَلَائِكَةِ وَالشُّرَفَاءِ  
الْمُهَيْمِينَ كَعَزَائِرِ النَّارِ يَا مُجِيبُ الْمُجِيرِ

सुब्बान जिल मुल्लि वल-म-ल कूनि सुब्बान जिल अिज्जति वल  
अज्जमति वल हैवति वल-कुद-रति वल-किब्बिपाइ वल ज. व रलत ●  
सुब्बानल-मलिकिल दयिल्लज्जी ला यनामु व ला यमूतु सुब्बुइन कइमुन  
रब्बुना व रब्बुल मलाइकति वर्हह ● अल्लाहुम-म अजिर्ना मिनन्नार-  
या मुजीरु या मुजीरु या मुजीरु ●



## ● ईदैन यानी दोनो ईदों की नमाज़

साल भर में दो ईदें हैं— एक ईदुल फ़ित्र, दूसरी ईदुल अज़हा। इन दोनों ही ईदों में ये काम सुन्नत या मुन्नहय है— गुम्ल और मियवाक करना, अच्छे कपड़े पहना, खुशबू लगाना, "ईदुल फ़ित्र" के दिन नमाज़ से पलहे कोई मोटी चीज़ खाना, मदक़ा-ए-फ़ित्र अदा कर के जाना, ईदुल अज़हा में नमाज़ के बाद, कुर्बानी में से खाना, शहर से बाहर ईदगाह में ईद की नमाज़ पढ़ना, पैदल जाना, एक रास्ते में जाना, दूसरे रास्ते में आना, रास्ते में तक्बीर अय्याम, ए-तशरीफ़ कहते हुए जाना, ईदुल फ़ित्र में धीरे-धीरे और ईदुल अज़हा में ऊँची आवाज़ में तक्बीर कहना, इदुल अज़हा से एक दिन पहले यानी नवा ज़िल्हिज़्जा की नमाज़े फ़ज्र से तेरहवी तारीख़ की नमाज़े अन्न तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद बलन्द आवाज़ से अकेला वाजमाअत, अदा, क़ना, मफ़र, हज़र, मर्द औरत हर एक फ़ तक्बीर पढ़ना याजिब है। ईदैन की नमाज़ की नीयत पहले लिखी जा चुकी है। ○

## तक्बीर अय्याम-ए-तशरीफ़

اللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ اللَّهُ أَكْبَرُ

अल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर ला इला ह इल्लाअल्लाहु बल्लाहु अकबर अल्लाहु अकबर व लिल्लाहिल हमद ●

## नमाज़ शवे क़द्र की नीयत

نَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِ اللَّيْلِ الْقَدْرِ  
مُؤَجَّجَةً إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ लैलनुल क़द्र की यादने अल्लाहु तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

## शवे क़द्र की दुआ

اللَّهُمَّ ارْزُقْ عِبْدَكَ عَبْدِي

ए अल्लाह! बेशक तू माफ़ करने वाला है, माफ़ करने का फ़ायदा करता है, इसलिये तू मुझे माफ़ कर दे। ●

## नमाज़ लैलनुल वरअत (शवे बरात)

نَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِ اللَّيْلِ الْقَدْرِ  
مُؤَجَّجَةً إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ  
नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ लैलनुल वरअत की यादने अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

## नमाज़ इशराक़ की नीयत

نَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِ الْإِشْرَاقِ  
رُسُولِ اللَّهِ تَعَالَى مُؤَجَّجَةً إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ  
नीयत की मैंने दो रकअत नमाज़ इशराक़ सुन्नत रसूल पाक की यादने अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ अल्लाहु अकबर ●

इशराक़ की नमाज़ का वक़्त सूरज निकल जाने के बाद से शुरू होता है, यह नमाज़ दो दो रकअत करके कम-से-कम चार और ज्यादा बारह रकअत तक है। ○

## नमाज़े चाशत की नीयत

نَوَيْتُ أَنْ أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِ الْبُحْرِ  
رُسُولِ اللَّهِ تَعَالَى مُؤَجَّجَةً إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ



नीयत की मैंने दो रकअत नमाज वाशत' सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

नमाजे वाशत दो दो रकअत करके कुल चार रकअत पढ़ी जाती है, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हमेशा चार रकअत ही पढ़ा करते थे, इस नमाज का वक्त दिन चढ़े (करीब 90 बजे) यानी इशराक की नमाज के बाद होता है। ○

### नमाजे तहज्जुद की नीयत

لَوَيْتُ أَنَا أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى  
رُكْعَتَيْنِ صَلَوَةً أَلَهِيَّةً مُسَبِّحَةً رُسُولَ اللَّهِ تَعَالَى  
مُتَوَجِّهًا إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज तहज्जुद सुन्नत रसूले पाक की वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

तहज्जुद की नमाज दो रकअत से बारह रकअत तक है— यह नमाज रात गहरी होने पर यानी आधी रात के बाद पढ़ी जाती है, इस नमाज के पढ़ने का बहुत ज्यादा सवाब है। बहुत ताकीद भी है। ○

### नमाजे अब्वावीन की नीयत

لَوَيْتُ أَنَا أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَةً أَلَهِيَّةً مُسَبِّحَةً  
إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज नफ़ल अब्वावीन' की वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

● नमाजे अब्वावीन का वक्त बाद नमाजे मारिब और क़व्व ईशा तक वतौर नफ़ल के है। यह नमाज दो दो रकअत करके ६-१२ या २०

रकअत तक है वैसे छः रकअत की ही ज्यादा रियायतें मिलती है— जिसने यह छः रकअतें पढ़ीं— उसकी यह नमाज बारह साल की इबादत के बराबर होगी। ○

### नमाजे इसतिखारा की नीयत

لَوَيْتُ أَنَا أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَةً أَلَهِيَّةً مُسَبِّحَةً  
إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज इसतिखारा की, वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

● यह नमाज किसी काम के करने या न करने के सही फैसले तक पहुँचने के लिये, अल्लाह की रजामन्दी हासिल करने का जरया है— अल्लाह तआला दिल में दुरुस्त बात डाल देते हैं। ○

### नमाजे हाजत की नीयत

لَوَيْتُ أَنَا أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَةً أَلَهِيَّةً مُسَبِّحَةً  
إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज हाजत की वास्ते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर

● जब किसी को कोई हाजत या जरूरत पेश आए तो वृत्त करे और दो रकअत नमाजे हाजत पढ़कर अल्लाह तआला से दुआ करे। ○

### नमाजे कुरसूफ़ की नीयत

لَوَيْتُ أَنَا أُصَلِّيَ لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَةً أَلَهِيَّةً مُسَبِّحَةً  
إِلَى جَهَنَّمَ الْكَبِيرَةِ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज कुरसूफ़ सुन्नत रसूले पाक की वास्ते



अल्लाह न आला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु

अकबर

सूरज ग्रहन के वजन दो रकअत नमाने कुसूफ व आवाजे बलन्स  
पढ़ना मुजब है- जमाअत के साथ पढ़ना बेहतर है. मुकिन न हो तो  
अकेले भी पढ़ी जा सकती है। ○

### नमाजे खसूफ की नीयत

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَصْلَى لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِهِ الْخُسُوفِ سَنَةِ رَسُولِ  
اللَّهِ تَعَالَى مُحَمَّدًا إِلَى جَهَنَّمَ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज खसूफ मुजबत रमूल पाक की वास्ते  
अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु  
अकबर ●

बाँटे ग्रहन के वजन दो रकअत नमाने खसूफ पढ़ना मुजबत है- लम्बी-  
लम्बी सूरतों के साथ ग्रहन खत्म होने तक यह नमाज, दीगर नफ्त  
नमाने, तिलावत, निज अजकार बाँरा करने रहना मुजबत है-  
आरतों का इस कैफियत में रहना दौरान ग्रहण बेहतर है। ○

### नमाजे इसतिसका की नीयत

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَصْلَى لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِهِ الْإِسْتِسْكَاءِ  
مُحَمَّدًا إِلَى جَهَنَّمَ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने दो रकअत नमाज इसतिसका की, वासते अल्लाह  
तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ अल्लाहु अकबर ●  
जब वारिश न हो और सूखा पड़ने लगे तो पानी के लिये अल्लाह से  
दुआ करना मुजबत है- लोग जमा होकर जमाअत के साथ यह  
नमाज पढ़ें और अल्लाह से मदद चाहें। ○

### नमाजे सलातुत तसबीह की नीयत

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ أَصْلَى لِلَّهِ تَعَالَى رُكْعَتَيْنِ صَلَوَاتِهِ التَّسْبِيحِ  
مُحَمَّدًا إِلَى جَهَنَّمَ الشَّرِيفَةِ اللَّهُ أَكْبَرُ

नीयत की मैंने चार रकअत नमाज सलातुत तसबीह मुजबत रमूल पाक  
की, वासते अल्लाह तआला के मुँह मेरा काअवा शरीफ की तरफ  
अल्लाहु अकबर ●

सलातुत तसबीह में वे इन्तिहा सबाव है इन्हें अकरम सल्लल्लाहु तआला  
अल्लै वसल्लम ने हजरते अब्बास रजिअल्लाहु तआला अल्लै में  
फरमाया कि ए चचा! अगर तुमसे हो सके तो सलातुत तसबीह हर रोज  
एक बार पढ़ो अगर यह न हो सके तो महीने में एक बार और यह  
भी न हो सके तो साल में एक बार और यह भी न हो सके तो ज़म  
में एक बार। ○

### सलातुत तसबीह की तरकीब

नीयत करने और तकवीर तहरीमा (अल्लाहु अकबर कहने और हाथ  
बाँधने) के बाद **सना** पढ़ें- फिर १५ बार यह तसबीह पढ़ें :

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَاللهُ أَكْبَرُ وَاللهُ أَكْبَرُ وَاللهُ أَكْبَرُ

मुबहानल्लाहि बलहमदु लिल्लाहि व ला इला ह इल्लल्लाहु बल्लाहु  
अकबर व लाहो ल बला कुव् बना इल्ला बिल्ला हिल अनिइल  
अजीम ○

फिर तअव्जुज, तसमीयह, सूरः फातिहा और कोई सूरः पढ़ कर  
दस (१०) बार ऊपर वाला तसबीह पढ़ें फिर रुक करे और रुक में  
१० बार पढ़ें फिर रुक से सर उठाए और तसमी व तहमीद के बाद  
१० बार यही तसबीह पढ़ें फिर सज्दा को जाए और इसमें दस  
भरतवा पढ़ें फिर सज्दा से सर उठाए तो बैठकर दस १० बार पढ़ें



और उसके बाप का नाम ले। ०

### अफ्रीका की तरकीब और दुआ

जिस के कोई लड़का या लड़की पैदा हो तो वेक़तर है कि मानवी किन उसका सर मुंडवादे और वालों के वज़न के बराबर चाँदी या उसकी एकम सवका करे और कोई इसलामी नाम रख कर उसको तगफ़्र में ज़ालवार ज़बह करे-यही अफ्रीका है। अगर लड़का हो तो दो बकरी या दो भेड़, गुन्जाइश न हो तो एक ही और लड़की हो तो एक बकरी या एक भेड़ ज़बह करे, जब अफ्रीका का जानवर ज़बह करना हो तो उसको लेटा दे और खुद क्रिज़्ना रख होकर (लड़का हो तो) यह दुआ

पढ़े  
 اللَّهُمَّ خَلِّدْهُ عَقِيقَةً ابْنِي فَلَانٍ دَعَا بِدَاهِمِهِ وَجَمَعْنَا  
 بِيَحْيَاهُ وَعَظَمْنَا بِعَظِيمِهِ وَجَدَلْنَا بِحُلِيِّهَا وَشَعَرْنَا بِشَعِيرَةِ  
 أَنْبَرٍ بِعَظَمَانِهَا فَلَا يُؤْتِي مِنَّا رِأْيِي وَجَعَلْتُ وَجْهِي لِلدِّينِ  
 فَطَرْتُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِنَّ  
 صَلَاتِي وَنَسْلِي وَخِيَارِي وَلَدِي لِلدِّينِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ  
 وَبِذَلِكَ أَمَرْتُ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ اللَّهُمَّ مِنْكَ وَالْتَ بِسْمِ اللَّهِ الْكَبِيرِ  
 फ़िर। विमिल्लाहि-अल्लाहु अकबर कर कर ज़बह करे। अगर लड़की  
 हो तो यह दुआ पढ़े—

اللَّهُمَّ هَبْهُ عَقِيقَةً بِنْتِي فَلَانٍ دَعَا بِدَاهِمِهَا وَجَمَعْنَا  
 بِعَظَمَانِهَا وَجَدَلْنَا بِحُلِيِّهَا وَشَعَرْنَا بِشَعِيرَتِهَا فَلَا يُؤْتِي  
 مِنَّا رِأْيِي وَجَعَلْتُ وَجْهِي لِلدِّينِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

लफ़्ज़ फ़ुलान की जगह लड़का या लड़की और उसके बाप का नाम ले।

फिर दूसरे सज़ा में जाए तो दस १० बार पढ़े इसी तरह चार रकअत पढ़े और हर रकअत में ७५ यानी कुल ३०० बार यह तसबीह पढ़े-  
 - यह तसबीह रुकू और सुजूद की तसबीहत सुब्हा न रबिबयल अज़ीम और सुबहा न रबिबयल अशला कहने के बाद पढ़े। ०

### कुरबानी की नीयत और तरीका

□ जब कुरबानी का जानवर लेटा दे तो क्रिज़्ना रख होकर यह पढ़े □  
 إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلدِّينِ فَطَرْتُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا  
 وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ إِنِّي صَلَوْتُي وَنَسْلِي وَخِيَارِي وَلَدِي  
 لِلدِّينِ رَبِّ الْعَالَمِينَ لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَلِكَ أَمَرْتُ وَأَنَا مِنَ  
 الْمُسْلِمِينَ اللَّهُمَّ مِنْكَ وَالْتَ بِسْمِ اللَّهِ الْكَبِيرِ

इन्नी वज्जहतु वज्हाहि य लिल्लाज़ी फ़ न रम्ममावानि वल अर्दे हनीफ़व व मा अना मिनल मुशरिकीन • इब सलाती व नुसुकी व महया य व ममाती लिल्लाहि रब्विल आलमीन • ला शरी क लहु व विजालि क उमिर्नु व अना मिनल मुसलिमीन, अल्लाहुम्म मिन-क व ल-क विमिल्लाहि अल्लाहु अकबर •

पढ़ कर ज़बह करे, ज़बह के बाद अगर अपनी तरफ़ से कुरबानी की है तो इस तरह कहे—

اللَّهُمَّ لَهْبًا لِمِثْلِي مَا تَقْبَلَت مِنِّي  
 حَنِيفًا حَنِيفًا وَخِيَارًا رِأْيِي رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالْتَ بِسْمِ اللَّهِ الْكَبِيرِ

अल्लाहुम्म तक्रव्वलहु मिन्नी कमा तक्रव्वल त मिन हबीबि क मुहम्मदिव व खलीलि क इबराही म अलौहिमससलानु वससलाम • अगर किसी दूसरे के नाम से करे तो लफ़्ज़ मिन्नी की जगह उसका



## जनार्जे का वयान

### गुप्त और वधन-वन्दन

जब किसी मुसलमान की मौत करीब आ जाए और जान निकलने लगे, तो उसको खिल लिटा दो और उसके पांच किकलें की तरफ कर दो और मर ऊंचा कर दो ताकि मुंह किकलें की तरफ हो जाए और उसके पास बैठ कर जोंर-जोर से कलिमा तैयबा पढ़ो ताकि तुम से मुनकर वह भी पढ़ ले, लेकिन उससे यह मत कहो कि पढ़, इस लिए कि वह सख्त मुश्किल का वक्त है। खुदा न करे, वह पढ़ने में इंकार कर दे या मुंह में कुछ और निकल जाए। सूर: यारीन शरीफ पढ़ने से मोत की सख्ती कम होती है, उसके सिरहाने या किसी दूसरी जगह उसके पास बंठकर यारीन शरीफ पढ़ दो या किसी से पढ़वा दो, जब वह निकल जाए तो उसका मुंह किसी कपड़े से इस तरह बांध दो कि ठोड़ी के नीचे से निकाल कर दोनों जबड़ों से मर पर ले जाकर बांध दो, ताकि मुंह न फैल जाए और पांच के दोनों ओरों भिला कर बांध दो और ओंखें बन्द कर दो और बन्द करने में वक्त यह पड़ो—

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ  
وَحَبْلِهِ وَخَيْرِ أُمَّةٍ خَلَقْتَ فِي دَعْوَةِ

विमिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल म वज् अल अल्लाहुम-म मा ख-र-ज इलैहि खैरम मिम्मा ख-र-ज अन्ह •

फिर उसको चादर चोगरह उढ़ाकर नहलाने का इन्तिजाम करो।

**पदखला** उसके पास लोवान चोगरह कोई ख़ुशबू सुलगा दो, हैज व निफास वाली औरत और जिस पर गुसल फर्ज हो, उसके पास न रहे और जब तक उसको गुसल न दे दिया जाए, उसके पास कुरआन

## मयान को नहलाना

जब नहलाने का इरादा करो, किसी कपड़े या कड़े तख्त को जिला या गुसल देना हो) लोवान या अपर वर्नी को घुनी ३ बार या ५ बार दे दो, फिर मुँह को उस पर लिटा दो और इसके पढ़ने में कपड़े अला कर दो और उसकी नाक में घुटने तक एक कपड़ा मन्स छिपाने के लिए डाल दो और गुसल देना शुरू करो।

पहले मुँह को इन्तिजा कराओ, लेकिन उसकी रानों और इन्तिजे की जगह को हाथ न लगाओ और उसपर निगाह भी न डालो, बल्कि अपने हाथ में कोई कपड़ा लपेट लो और जो कपड़ा नाक में लंकर रानों तक पड़ा है, उसके अन्दर-अन्दर धुलाओ, फिर उसको घुन कर दो, लेकिन न कुल्लो कराओ और न नाक में पानी डालो, पहले मुँह धुला दो, फिर दोनों हाथ कुल्लियाँ भमत, फिर मर का पहा, फिर दोनों पांच धुला दो और मुँह और कानों में रुई भर दो, ताकि घुन कराने और नहलाने वक्त पानी अन्दर न जाने पाए। जब घुन कर चुको तो सर को किसी चीज़ से निमसुं साफ़ हो जाए, मल का धोओ, फिर मुँह को बायीं करवट लिटा कर शीत पर्म पानी तीन बार मर से पैर तक डालो, यहां तक कि बायीं करवट तक पानी पहुंच जाए, फिर दाहिनी करवट पर लिटा दो और इसी तरह मर में पेर तक तीन बार इतना पानी डालो कि दाहिनी करवट तक पहुंच जाए। इसके बाद मुँह को अपने बदन की टेक लगा कर बिठाओ और उसके पेट को धीरे-धीरे मलो, अगर कुछ पखाना चोगरह निकले तो पोंछ कर धो डालो और घुनू और गुसल में उसके निकलने से कोई नुकसान नहीं, इसके बाद फिर उसे बायीं करवट पर लिटाओ और कफ़ू पड़ा हुआ पानी सर से पांच तक तीन बार डालो।



### कफ़नाना

मर्द को तीन कपड़ों में और औरतों को पांच कपड़ों में कफ़न देना शुद्ध है, सब की तस्सील यह है—

१. इज़ार सर से लेकर पांच तक ।
२. चादर, जो इज़ार से एक काध बड़ी हो, इसको लिफ़ाफ़ा कहते हैं ।
३. कुरता, गले से लेकर पांच तक, जिसमें न आस्तीन हों, न कलियां हों, उसको कफ़नी भी कहते हैं । ये तीनों कपड़े मर्द व औरत दोनों के कफ़न होते हैं । औरत के कफ़न में दो कपड़े, जो ज़्यादा हैं—

१. एक सर बंद, जो तीन हाथ लंबा हो,

२. दूसरा सीना बंद, जो छाती से लेकर रानों तक हो । इब्रस्तान ले जाते वक़््त जो चादर ऊपर डालते हैं, वह कफ़न से अलग है, लेकिन औरत के जनाज़े पर चादर डालना पर्दे की वजह से ज़रूरी है और मर्द के जनाज़े पर डालना ज़रूरी नहीं है । आम तौर से मर्द के कफ़न में ऊपर की चादर के अलावा दस मीटर कपड़ा ख़र्च होता है और औरत के लिए ऊपर की चादर लेकर २२ मीटर लगता है और बच्चे को कफ़न उसके मुनासिब हाल लिया जाए ।

जब कफ़नाने का इरादा करो तो चारपाई पर अब्बल लिफ़ाफ़ा, उसपर इज़ार फिर उस पर कफ़नी का वह हिस्सा जो मय्यत के नीचे रहेगा, बिछा दो और कफ़नी के उस हिस्से को, जो ऊपर रहे, समेट कर सिरहाने की तरफ़ रख दो । फिर मुर्दे को गुल्ल वाले तख़्त से उठा कर किसी कपड़े से उस का सारा वदन पोंछ कर फैलाए हुए कफ़न पर धीरे से लिटा दो और कफ़नी के उस हिस्से को, जो सिरहाने की तरफ़ समेट कर रखा है, मुर्दे के गले में डाल कर पैरों की तरफ़ बढ़ा दो और सर ढांकने के लिए जो कपड़ा उसके वदन पर पहलने से है, उस

को निकाल दो । सर और दाढ़ी पर और मज्ता करने की जगहों यानी पेशानी, नाक, दोनों हथेलियों और पांच के दोनों पंजों पर काफ़ूर मल दो, फिर इज़ार का बायां पल्ला लौट कर उस पर दायां पल्ला लौट दो, फिर लिफ़ाफ़े को भी इसी तरह कर दो और एक कतर लेकर सिरहाने और पांचनी चादर (यानी लिफ़ाफ़े) के कोनों को बांध दो । यह मर्द के कफ़नाने का तरीका है ।

अगर जनाज़ा औरत का हो तो उसमें यूँ करो कि कुर्ता पहना कर सर के बालों को दो हिस्से करके कुरते के ऊपर सीने पर डाल दो, एक हिस्सा दाहिनी तरफ़ और एक हिस्सा बायाँ तरफ़ रहे । इसके सर बन्द सर पर और बालों पर डाल दो, उसको न बांधो, न लपेटो । इसके बाद इज़ार लपेटो, पहले बायाँ तरफ़ लपेटो, फिर दाहिनी तरफ़, इसके बाद सीना बन्द बांधो, फिर चादर लपेटो, पहले बायाँ तरफ़, फिर दाहिनी तरफ़ । इसके बाद सिरहाने और पांचनी कफ़न में गिरा दे दो । कफ़नाने के बाद जनाज़े की नमाज़ और दफ़नाने में जल्दी करो ।

### नीयत और तरकीब नमाज़े जनाज़ा

نُيِّتُ أَنْ أَذِيَّ مَوْلًى أَوْ أَزْوَاجٍ أَوْ  
عَلَمٍ أَوْ بَعْدٍ أَوْ شَيْءٍ مِّنْهُنَّ  
لَهُنَّ الْوَسِيَّةُ وَفِي ذَلِكَ حَقٌّ  
لِّيُحْضَرَ الشَّعْرُ

नीयत की मैंने नमाज़े जनाज़ा की ४ तकबीरों के साथ वास्ते अल्लाह तआला के, तारीफ़ अल्लाह तआला की और हुआ इस मय्यित के लिये मुँह मेरा काअबा शरीफ़ की तरफ़ पीछे इस इमाम के ।

फिर कानों तक दोनों हाथ उठाकर अल्लाहु अकबर कहते हुए दोनों हाथों को नाक के नीचे बाँध ले फिर यह **सना** पढ़े —



سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ ذُكِّرُوا بِآيَاتِكَ  
وَقُلْتُ بَعْدَ ذَلِكَ وَجَعَلْتُ لَكَ الْإِسْلَامَ

सुबहान क अल्लाहुम्म व बिहमदि क व तबा रकमु क व तआला  
जुहु क व जल्ल सनाउ क व लाइला ह गैरक •

फिर वगैर हाथ उठाए अल्लाह अकबर कहे और दरदे इबराहीमी  
यानी नमाज वाला दरुद शरीफ पढ़े, फिर वगैर हाथ उठाए अल्लाह  
अकबर कहे और वालिग का जनाजा हो तो यह दुआ पढ़े—

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِحَيٍّ وَوَيْتٍ نَا وَشَاهِدٍ نَا وَوَيْتٍ نَا  
وَصَغِيرٍ نَا وَكَبِيرٍ نَا وَكُرَّاءٍ نَا وَوَيْتٍ نَا  
وَمَنْ تَوْ وَوَيْتٍ نَا وَوَيْتٍ نَا وَوَيْتٍ نَا

अल्लाहुम्मग फिर लिहयेना व मय्यतिना व शाहिदिना व गा इ बिना  
व सागिरिना व कबीरिना व ज क रिना व उनमाना • अल्लाहुम्म मन  
अहययतहू मित्रा फ अहयेही अलल इस्लामि व मन तवफकैतहू मित्रा  
फ त वफफहू अलल ईमान •

इसके बाद चौथी तकबीर कहे फिर वगैर कोई दुआ पढ़े सलाम फेरे -  
— अगर नावालिग लड़के का जनाजा हो तो तीसरी तकबीर के बाद  
यह दुआ पढ़े—

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَكَ قُرْطًا وَاجْعَلْهُ لَكَ اجْرًا  
ذُرًّا وَاجْعَلْهُ لَكَ شَفِيعًا وَمُسْقِفًا

अल्लाहुम्मज अलह लना फ र तवै वज अलह लना अजरवै व जुखवै  
वज अलह लना शाफिअवै व मुशफफअ •

और अगर नावालिग लड़की का जनाजा हो तो यह दुआ पढ़े—

اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ لَكَ قُرْطًا وَاجْعَلْهُ لَكَ اجْرًا  
ذُرًّا وَاجْعَلْهُ لَكَ شَفِيعًا وَمُسْقِفًا

अल्लाहुम्मज अलहा लना फ र तवै वज अलहा लना अजरवै व  
जुखवै वज अलहा लना शाफि अ तवै व मुशफफअ: •

### दफनाना

जब जनाजे की नमाज से फरिग हो जाए तो मय्यत को दफन कर दे।  
दफन करना भी फर्ज किकाया है। जब दफन के लिए जनाजे को  
कब्रस्तान में ले चले, तो तेज कदम चले, लेकिन दौड़े नहीं, जनाजे के  
साथ पैदल चलना मुस्तहब है।

**मस्अला** जनाजा ले जाते वक़्त कोई दुआ या जिक (जैसे ला इला-  
ह इल्लालाह या अल्लाह अकबर) ऊंची आवाज़ से पढ़ना बिद्अत है  
और धीमी आवाज़ से भी कोई खास जिक साबित नहीं। अगर धीरे-  
धीरे कुछ पढ़े और जनाजा ले जाने की सुन्नत न समझे तो यह पढ़  
सकता है।

**मस्अला** जब क़ब्र तैयार हो जाए तो मय्यत को क़िस्ते की तरफ से  
क़ब्र में उतारे, जिसका तरीका यह है कि जनाजे को क़ब्र से क़िस्ते की  
तरफ रखा जाए और उतरने वाले क़िस्ता रख खड़े होकर मय्यत को  
क़ब्र में उतारे।

**मस्अला** क़ब्र में रखते वक़्त—  
سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ ذُكِّرُوا بِآيَاتِكَ  
बिरमिल्लाहि व अला मिल्लति रसूलिल्लाह • कहना मुस्तहब है।

**मस्अला** मय्यत को क़ब्र में रख कर दाहिने पहलू पर क़िस्ता रख  
लिटा देना मरनून है।

**मस्अला** क़ब्र में रख कर दोनों गिरहें खोल दो, जो सिरहाने और  
पायती खुल जाने के डर से लगायी गयी थीं।

**मस्अला** औरत को क़ब्र में रखते वक़्त परदा करना मुस्तहब है







(हवीस शरीफ में है कि शतान की आंखों और इन्सान की शर्मगाहों के दर्मियान 'बिस्मिल्लाह' आह बन जाती है) और यह हुआ पढ़े :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊजु बि-क भिनल खुबुसि वल खवाइस •

**तर्जुमा** ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ खबीस जियों से, मर्द हों या औरत ।

★ वैतुल खला (पाछाना) से निकल कर पढ़े

□ पहले कहे 'गुफरा-न-क' फिर पढ़े :

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَذْهَبَ عَنِّيْ الْاَزْوَاجَ وَآفَاقَهَا

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लाजी अज ह व अझिल अजा व आफ़ाना •

**तर्जुमा** सब तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने मुझसे ईजा देने वाली चीज़ दूर की और मुझे चैन दिया । 'गुफरा-न-क' यानी 'ऐ अल्लाह! मैं तुझ से बख्शिशा का सवाल करता हूँ ।

★ खाना शुरू करने वक़्त पढ़े

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहि व अला वर क तिल्लाह •

**तर्जुमा** मैं ने अल्लाह के नाम से और अल्लाह की वरकत पर खाना शुरू किया ।

★ खाने से पहले 'बिस्मिल्लाह' पढ़ना भूल जाए तो याद आने पर पढ़े :

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहि अब्बलह व आखि रह •

**तर्जुमा** मैंने इसके अब्बल व आखिर में अल्लाह का नाम लिया ।

★ खाने के दर्मियान पढ़ता रहे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَذْهَبَ عَنِّيْ الْاَزْوَاجَ وَآفَاقَهَا

अल्लाहुम्म लकल हमद व ल-क शुक्र •

**तर्जुमा** ऐ अल्लाह! तमाम तारीफें तेरे लिए हैं और शुक्र तेरे लिए ।

★ खाने के बाद यह हुआ पढ़े

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लाजी अन-अ-म-ना व सकाना व ज-अ-न-न

भिनल मुस्लिमीन •

**तर्जुमा** तमाम तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें खिलाया और पिलाया और मुसलमान बनाया ।

★ पीने का वयान

□ पानी या कोई और चीज़ बैठ कर पिए और ऊँट की तरह एक सांस में न पिए, बल्कि दो या तीन सांसों में पिए और वर्तन में सांस न ले, न फूंक मारे और जब पीने लगे तो 'बिस्मिल्लाह' पढ़े और जब पी चुके तो 'अल्हम्दु लिल्लाह' कहे ।

★ दूध-चाय वगैरा पी कर पढ़े

اَللّٰهُمَّ يَا رَازِقَنَا فَزِدْنَا فَضْلَكَ وَارْزُقْنَا مِنْكَ

अल्लाहुम्म वारिक लना फ़ाहि व फ़िद-ना भिन्दु •

**तर्जुमा** ऐ अल्लाह! तू इसमें हमें वरकत दे और हमको ज़्यादा दे ।

★ आईने में अपनी शकल देखे तो पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ حَسْبُكَ خَلْقُكَ وَخَلْقُ خَلْقِكَ

अल्लाहुम्म अन-त हस्सन-त खल्की फ-हस्सिन खुल्की •

**तर्जुमा** ऐ अल्लाह! जैसे तूने मेरी शकल अच्छी बनायी, मेरे अज़्जाक भी अच्छे कर दे ।

★ खुशबू या इन इस्तेमाल करे तो पढ़े

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

सुबहानल्लाहि व बिहमदिही •

**तर्जुमा** अल्लाह पाक है और सारी तारीफों के लाइक वही है ।

★ घर में दाखिल होते वक़्त पढ़े

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا خَيْرَ الْمَخْرُجِ وَالْاَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ تَوَكَّلْنَا

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु-क खैरल मौलिजि व खैरल मख्रजि बिस्मिल्लाहि



● व-लज्जा विस्मिल्लाहि खरज्जा व अलल्लाहि रब्बना तवक्कलना ●

★ घर से बाहर निकलते वक़्त पढ़ें

विस्मिल्लाहि तवक्कल्लु अलल्लाहि

ला हौ-ल व ला कुव् व-त इल्ला विल्लाह

● اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ اٰلِهِٖ وَسَلِّمْ

**तर्जुमा** मैं अल्लाह का नाम लेकर निकला, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया, गुनाहों से बचाना और नेकियों की ताक़त देना अल्लाह ही की तरफ़ से है।

□ किसी सवारी पर 'विस्मिल्लाह'

पढ़ कर सवार

हो फिर जहाँ ठिकाना मिले या बैठ जाए तो कहें: 'अल्लहु लिल्लाह'

इसके बाद पढ़ें। اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ بِکَلِمَاتٍ خَلَقَ بِهَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَکَلَّمَ بِهَا نَبِیًّا وَرَزَقَ بِهَا مَنْ یُّشِیْءُ

सुखानल्लजी सख़्ख-र लना हाजा

● اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ

व मा कुन्ना लह मुक्किरनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुन कलिबून ●

**तर्जुमा** अल्लाह पाक है, जिसने उसको हमारे कब्जे में दे दिया और हम उसकी कुदरत के बग़ैर इसे कब्जे में करने वाले न थे और बिना शुब्हा हमको अपने रब की तरफ़ जाना है।

★ जब सफ़र से वापस होकर अपने इलाके में दाख़िल हो, तो पढ़ें:

आइबू-न ताइबू-न आबिदु-न लिराब्बि-न हामिदून ● اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ اٰلِهِٖ وَسَلِّمْ

**तर्जुमा** हम लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, अल्लाह की बन्दगी करने वाले हैं, अपने रब की हम्द करने वाले हैं।

★ पहले सलाम करना सुन्नत है اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ اٰلِهِٖ وَسَلِّمْ

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व ब-र-क-तुह ● اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ اٰلِهِٖ وَسَلِّمْ

**तर्जुमा** आप पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत हो और, बरकत हो।

★ सलाम का जवाब देना वाजिब है اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ اٰلِهِٖ وَسَلِّمْ

व अलैकुमुस्सलामु व रहमतुल्लाहि व ब-र-क-तुह ● اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ اٰلِهِٖ وَسَلِّمْ

**तर्जुमा** और आप पर (भी) सलामती हो और अल्लाह की रहमत हो और बरकत हो।